thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १४, अंक ७, १० जुलाई २०१४

वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

वैदिक विचारधारा के अनुयायी व ऋषिभक्त

राजर्षि शाहू महाराज

जन्म दिवस (२६ जून) पर शतशः अभिवादन !

thearyasamaj.org

-* प्रसिद्ध शिक्षाविद् डॉ.जे.एम.वाघमारे की गुरूकुल भेंट *-

श्रद्धानन्द गुरूकुल आश्रम परली में पूर्वसांसद एवं प्रसिद्ध शिक्षाविद् डॉ.जे.एम.वाघमारे का आगमन। साथ में हैं डॉ. ब्रह्ममुनिजी, आर्य कार्यकर्ता एवं ब्रह्मचारी गण।

डॉ. वाघमारेजी द्वारा प्रदत्त पन्द्रह लाख रू. की सांसदीय निधि द्वारा गुरूकुल में नवनिर्मित 'पं.नरेन्द्र वैदिक अनुसन्धान भवन' के सम्मुख उपस्थित श्री वाघमारे एवं अन्य।

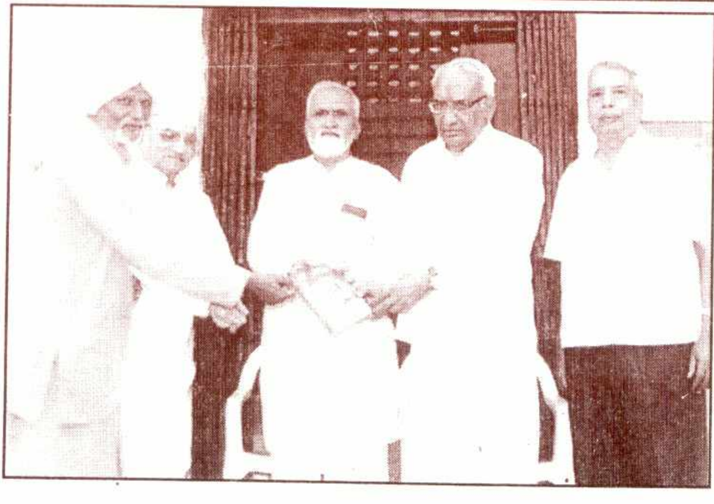

डॉ. वाघमारेजी को सभाद्वारा प्रकाशित पं. नरेन्द्र स्मृति ग्रन्थ (वैदिक गर्जना विशेषांक) भेंट करते हुए सभा के परामर्शदाता डॉ.ब्रह्ममुनिजी। साथ में हैं प्रो.होलीकर, लोहिया, एवं राठौर।

thearyasamaj.org

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११५ कलि संवत् ५११५ विक्रम संवत् २०७१
दयानन्दाब्द १९० आषाढ १० जुलाई २०१४

प्रधान सम्पादक
राजेंद्र दिवे
(मो.०९८२२३६५२७२)

सम्पादक
प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य
(मो.०९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक- डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ (मो. ०९४२११५११९०४), प्रो. देवदत्त तुंगार (मो.०९३७२५४१७७७)
प्रा. सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) श्रुतिसन्देश..४
२) श्रावणी-उपाकर्म महत्व..५
३) भ्रष्टाचार और उसकी सीमायें..७
४) सदाचार का महत्व..११
५) राज्यस्तरीय श्रावणी कार्यक्रम..१२
६) शोक समाचार..१८
७) केरल की सूचना..१९
८) राष्ट्रीय आर्य कार्यकर्त्ता संगोष्ठी-हरिद्वार..१९
९) महाराष्ट्र सभा-उपक्रम..२०

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/ दयानंदांची अमृतवाणी..२१
२) सुभाषित रसास्वादः/ गाथा वाचू दयानंदाची..२२
३) रा. शाहू महाराजांचे भावनगरचे ऐतिहासिक भाषण..२४
४) आर्यांमुळे शेतकऱ्यांच्या जीवनात नवसंजीवनी..२८
५) वैदिक पोरोहित्य कर्माची यथार्थता..३०
६) म. दयानंद-मराठी कॉमिक्स..३२

● प्रकाशक ●
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज
परली-वैजनाथ ४३१५१५

● मुद्रक ●
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज,परली-वै.

-वैदिक गर्जना के शुल्क-
वार्षिक - रू. ५०/-
आजीवन रू. ५००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा

thearyasamaj.org

श्रुति संदेश ईश्वर की ही उपासना करने योग्य है ।

न त्वावॉन्२ऽ अन्यो न पार्थिवो म जातो न जनिष्यते ।
अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे ।।

भाषार्थ :– हे (मघवन्) परमपूजितैश्वर्यवाले (इन्द्र) सब दुःखों का विदारण करनेवाले ईश्वर ! (वाजिनः) वेगवान् (गव्यतः) गौ = वाणी का उपदेश करनेवाले और (अश्वायन्तः) अपने अश्व की इच्छा करनेवाले हम लोग (त्वा) तेरी (हवामहे) स्तुति करते हैं । क्योंकि कोई (अन्यः) दूसरा पदार्थ (न) (त्वावान्) तेरे सदृश (दिव्यः) शुद्ध है (न पार्थिवः) न पृथिवी में प्रसिद्ध है (न जातः) उत्पन्न हुआ है (न जनिष्यते) न उत्पन्न होगा, अतः आप ही हमारे उपास्य देव हो ।।

भावार्थ :– परमेश्वर के सदृश न कोई शुद्ध है, न कोई उत्पन्न हुआ है और न उत्पन्न होगा और न वर्त्तमान है इसलिये ही सब मनुष्य इसको छोडकर अन्य किसी की उपासना इसके स्थान में न करें । इसी कर्म को इस लोक और परलोक में आनन्ददायक समझें ।

(महर्षि दयानन्द कृत यजुर्वेदभाष्य से साभार)

श्रावण-स्वाध्याय पर्व 'श्रावणी' पर शुभकामनाएं !

मानव जीवन कल्याण वेदप्रचार अभियान

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में राज्य की लगभग १३० आर्य समाजों में श्रावणी वेदप्रचार पर्व के उपलक्ष्य में **मानव जीवन कल्याण वेदप्रचार अभियान** की शुरूआत आगामी **२७ जुलाई २०१४** से उत्साह से हो रही हैं ।

बडी श्रद्धा व भक्तिमय वातावरण में हर आर्य समाज में विभिन्न तिथियों पर यह पावन पर्व मनाया जायेगा । इसके लिए सभा ने राज्य के बाहर से १२ और इस राज्य के ६० से अधिक विद्वानों व भजनोपदेशकों को आमंत्रित किया है । कुलमिलाकर लगभग ७२ वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में जगह-जगह आर्य समाजों में यज्ञ, भजन, प्रवचन व सत्संग तथा विद्यालयों व महाविद्यालयों एवं सार्वजनिक स्थानों पर व्याख्यानों का सफलतापूर्वक आयोजन होगा । अतः सभी आर्यजनों से निवेदन है कि सभाद्वारा दिये गये श्रावणी कार्यक्रमों को वे बडे उत्साह के साथ नियोजनपूर्वक मनावें ।

श्रावणी के पावन शुभ अवसर पर सभी आर्यजनों को हार्दिक शुभकामनाएं !

आमंत्रित विद्वानों व भजनोपदेशकों का हार्दिक अभिनन्दन !

निवेदक व अभिनन्दनेच्छु – महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

thearyasamaj.org

श्रावणी-उपाकर्म महत्व (ऋषि तर्पण)

- रणजीत आर्य 'विवित्सु'

प्राचीनकाल में वेद और वैदिक साहित्य के ही पठन-पाठन का प्रचार था । वैसे तो लोग प्रतिदिन वेद का स्वाध्याय करते थे । किन्तु वर्षा ऋतु में वेद के स्वाध्याय का विशेष आयोजन किया जाता था । इसका कारण यह है कि भारत एक कृषि प्रधान देश है । यहां की जनता आषाढ और श्रावण मास में कृषि कार्य में व्यस्त रहती थी । श्रावणी (सावणी) की जुताई और बुवाई आषाढ से लेकर श्रावण मास के अन्त तक समाप्त हो जाती थी । लोग श्रावणी पूर्णिमा पर कृषि-कार्यों से निवृत्त होकर वेद के स्वाध्याय में प्रवृत्त हो जाते थे । ऋषि मुनि लोग भी वर्षा के कारण अरण्य को छोडकर ग्रामों के निकट आकर रहने लगते थे और वही वेदाध्ययन, धर्म-उपदेश और ज्ञानचर्चा में अपना चातुर्मास्य (चौमासा) बिताते थे । श्रद्धालु लोग उनके पास जाकर वेद-अध्ययन और उपदेश श्रवण में अपना समय लगाते थे और ऋषिजनों की सेवा करते थे । इसलिए यह समय ऋषि तर्पण भी कहलाता है । जिस दिन से वेद पारायण का उपक्रम-आरम्भ किया जाता था उसे *'उपाकर्म'* कहते हैं । यह वेदाध्ययन श्रावण सुदी पूर्णमा को आरम्भ किया जाता था । अतः इसे ***'श्रावणी उपाकर्म'*** कहा जाता है । जैसा कि पारस्कर गृह्यसूत्र में (२/१०/२-२) लिखा है -

'अथातोऽध्यायोपाकर्म । औषधीनां प्रादुर्भावे श्रावण्यां पौर्णमास्याम्'

यह वेदाध्ययन का उपाकर्म श्रावणी पूर्णिमा से आरम्भ होकर पौष मास की अमावस्या तक साढे चार मास चलता था । पौष में इस उपाकर्म का उत्सर्जन (समाप्ति) किया जाता था । जैस कि मनुस्मृति में लिखा है -

श्रावण्यां पौष्ठपद्यां वाप्युपाकृत्य यथाविधि ।
युक्तश्छन्दांस्यधीयीत मासान् विप्रोऽर्थ पंचमान् ।।
पुष्ये तु छन्दसां कुर्याद् बहिरूत्सर्जनं द्विजः ।
माघशुक्लस्य वा प्राप्ते पूर्वार्द्धे प्रथमेऽहनि ।।

अर्थात श्रावणी और प्रौष्ठपदी भाद्रपद, पौर्णमासी तिथि से प्रारम्भ करके ब्राह्मण लगनपूर्वक साढे चार मास तक छन्द-वेदों का अध्ययन करे और पौष मास में अथवा माघ शुक्ल प्रतिपदा को इस उपाकर्म का उत्सर्जन करे ।आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के दस नियमों में तृतीय नियम यह दिया है - " वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढना-पढना और सुनना- सुनाना

thearyasamaj.org

सब आर्यों का परमधर्म है।" आर्यों को चाहिए कि वे इस श्रावणी उपाकर्म से प्रतिदिन वेद के स्वाध्याय का व्रत लें, प्रतिदिन सन्ध्या और अग्निहोत्र किया करें। अपने घर पर ओ३म् की पताका लगावें, नवीन यज्ञोपवीत धारण करके अपने स्वाध्याय आदि व्रतों में आई शिथिलता को दूर करें। वेद का स्वाध्याय न करने से ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य लोग शूद्र कोटि में चले जाते है निषाद और राक्षस बन जाते हैं। वेद के स्वाध्याय से शुद्र भी ब्राह्मण कोटि में चला जाता है।

रक्षाबन्धन :-

राजपूतकाल में नारियों के द्वारा वीरों के हाथों में अपनी रक्षा के लिये राखी बांधने की परिपाटी प्रारम्भ हुई। कोई नारी राखी भेजकर जिस वीर को अपना राखी-बन्द भाई भाई बना लेती थी वह उसकी आजीवन रक्षा करना अपना कर्त्तव्य समझता था। चित्तौड की महारानी कर्णवती ने मुगल बादशाह हुमायूं को गुजरात के बादशाह से अपनी रक्षा के लिये राखी भेजी थी और बादशाह हुमायूं ने तत्काल चित्तौड पहुंचकर उसकी रक्षा की थी। तब से यह रक्षाबन्धन के माध्यम से युवक और युवतियां परस्पर भाई-बहन के रिश्ते में बंधकर राष्ट्र की अनेक अपहरण, बलात्कार आदि समस्याओं का समाधान कर सकते है और राष्ट्रीय चरित्र को आदर्श बना सकते हैं।

- आर्ष गुरूकुल महाविद्यालय,
आमसेना (उडीसा)

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभातंर्गत आर्य समाज परली द्वारा संचालित

श्रद्धानन्द गुरूकुल महाविद्यालय, परली- वै.

प्रवेश सूचना

आप सभी को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभांतर्गत आर्य समाज परली द्वारा संचालित **'स्वामी श्रद्धानन्द गुरूकुल महाविद्यालय'** में दि.१५ जून २०१४ से पांचवी कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को छठी कक्षा में प्रवेश दिये जा रहे हैं। परली शहर के वैद्यनाथ मंदिर से २ कि. मी. दूरी पर सुरम्य पर्वतीय प्रदेश में विद्यमान इस शिक्षास्थली में महर्षि दयानन्द आर्ष विद्यापीठ, झज्जर (रोहतक) से संलग्न आर्ष पाठ्यक्रम चलाया जाता है, जिसमें वेद, व्याकरण, संस्कृत साहित्य के साथ ही अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, गणित, विज्ञान आदि विषयों का तज्ज्ञ अध्यापकों के सान्निध्य में अध्यापन होता है। गरीब, अनाथ व होनहार छात्रों को निःशुल्क प्रवेश दिया जाएगा। **अतः अपने बच्चों को सुसंकारित कराने व वेदानुयायी बनाने हेतु प्रवेश दिलावें।**

सम्पर्क- आचार्य प्रवीण(८८५५०८०६३२),
विज्ञानमुनि(९९७५३७५७११),डॉ.ब्रह्ममुनि (९४२११५११०४)

thearyasamaj.org

(गतांक से)

भ्रष्टाचार और उसकी सीमायें

- डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ

भ्रष्टाचार क्या है ?

(भ्रष्टाचार का स्वरूप)

परमपिता ने जीवात्मा के संपूर्ण कल्याण के लिए इस सृष्टि की रचना की है।

* वेद का सत्य तथा शाश्वत ज्ञान जीवात्मा के कल्याण के लिए दिया।

* शरीर, मन, बुद्धि, अन्तःकरणा, प्रवृत्तियां, षड्‌रिपु आदि सभी जीवात्मा के कल्याण के लिए दिये हैं।

* उसका उपयोग करने का पूरा-पूरा अधिकार जीवात्मा को दिया है।

* सृष्टि में कल्याणप्रद नियम बनाये, ये भी जीवात्मा के कल्याण के लिए ही।

* जीवात्मा की स्वाभाविक इच्छा परमात्मा से मिलने की है। वह इच्छा पूरी करने के लिए मनुष्यजन्म दिया, उसका ज्ञान दिया। परमात्मा से मिलने का रास्ता और स्थान भी बताया। (गाढ निद्रा में केवल आत्मा और परमात्मा ही तो होते हैं।)

अब इन सभी नियमों के विरूद्ध जो चला उसको परमात्मा दण्ड भी देता है। वेद के ज्ञान को हमने ही बिगाड दिया है। आचरण को बिगाड दिया। शब्द तो वही रखे, परन्तु परिभाषा बदल डाली। श्रेष्ठता, गुणवत्ता उदारता को ठुकराकर दुष्कर्मों को अपनाया। परमात्मा को भूल गए और नकली परमात्मा खडे किए। उन नकली परमात्मा की नकली व्यवस्था बना दी और नकली न्याय, शुरू किये। इन बातों द्वारा सब कुछ तहस-नहस कर दिया।

* हम स्वयं की आत्मा को ही भूल गए, उसकी स्वाभाविक इच्छा को भूल गए और मन व इन्द्रियों के गुलाम बन गए।

मनुष्य जीवन का लक्ष्य जो कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष है, उसे भी हमने भुला दिया।

* जीवन समाप्त होने के बाद साथ में क्या ले जाना है ? यह भी भूल गए।

* आचार्य, विद्वान, धर्मगुरू, पुरोहित, साधु संन्यासी सभी केवल नामधारी रह गए। ज्ञान, गुण, प्रवृत्ति विपरीत हो गई। विपरीत प्रवृत्तिवालों ने लोगों को विपरीत ज्ञान (अज्ञान) सिखाया, इसीलिए मनुष्य के बिगड जाने की प्रक्रिया ने जोर पकडा।

* मनुष्य बिगडा तो माता (प्रथम गुरू) बिगड गयी। पिता (दुसरा गुरू) बिगड गया और जो गुरू कहलाते हैं, वे भी बिगड गए। यह बिगडने की इस श्रृंखला ने परंपरा का रूप धारण किया। '**विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः** ।' इस वचन के अनुसार सर्वत्र इतना बिगाड आया कि सुधार की कल्पना भी दुभर हो गई।

thearyasamaj.org

* मनुष्यमात्र अनेक पंथ, मत, जाति देश, प्रांत में बंट गया ।

* अपना महत्व बढाने के लिए नाना युक्तियाँ अपनायी, प्रलोभन और लालच सिखाये समय पडा, तो अन्य बुराइयां भी सिखा दी ।

* परिणामस्वरूप आपस में ईर्ष्या, द्वेष, छल, कपट शुरू हुआ । धोखाधडी और विश्वासघात देवों में भी प्रविष्ट हुआ । देवों की भी लडाइयाँ प्रारंभ हुई ।

* खान-पान बिगड गया । मांसाहार, मद्य और व्यभिचार भी धर्म का अंग हो गया । दुष्टता धर्म का अंग बन गई ।

* फिर गोरखधंदा शुरू हुआ, लोगों को जादा अज्ञानी बनाकर उनसे पैसे और सेवा ऐंठकर ऐशो आराम करने की प्रवृत्ति बढ गयी ।

* इसीलिए तो धर्मगुरू का आसन, मान, पालखी आदि आडंबरो ने डेरा डाला ।

* केवल विश्वास रखो व सेवा करो, तो तुम्हारे जीवन का कल्याण हो जायेगा, इस प्रकार की दांभिकता ने जन्म लिया ।

* परमात्मा और देवों का स्थान धर्मगुरूओं ने ले लिया । गुरू-शिष्य परंपरा (गुरू चेला गिरी) बन गई । इसी से ज्ञान परंपरा नष्ट होकर अज्ञान परंपरा चल पडी ।

* उदारता की जगह संकीर्णता आ गई ।

* कुछ भी किये बिना सुख, शांति, आनंद और यहां तक की परमात्मा भी मिले यह प्रवृत्ति बढ गई ।

* उस प्रवृत्ति की पूर्तता के लिए गुरू का आशीर्वाद, शक्तिपात यह भी सामने आया।

* लोगों को स्वर्ग - नरक की संकल्पना से डराकर, मृत्यु के बाद मिलनेवाले सुख-दुःखों (स्वर्ग वा नरक में) का झांसा देकर तथाकथित धार्मिकों ने लोगों को खुब लूटा।

* पाप - पुण्य की मनघडन्त परिभाषायें और आरचण मार्ग बनाकर गुरूलोगों ने स्वयं का स्वार्थ सिद्ध किया ।

* आज विज्ञान के युग में भी गुरूडम परचम लहरा ही दिया ।

* नवस करो, चढावा चढाओ, गुरूओं को दान दो, यही आडंबर मचा दिया ।

परमात्मा के उद्देश्य, व्यवस्था, दंड व्यवस्था और स्वयं के आत्मा की इच्छा के विरूद्ध जो मन्तव्य अथवा कार्य हैं, वे सब भ्रष्टाचार ही तो हैं ।

इस दृष्टि से धार्मिकक्षेत्र में मची अफरातफरी, जिसका जिक्र उपर्युक्त पंक्तियों में किया गया है; क्या वह धर्म के नामपर भ्रष्टाचार नहीं हैं ? धर्म के नाम पर अज्ञान फैलाना, अधर्म सिखाना आदि भ्रष्टाचार नहीं तो और क्या हैं ?

आज की परिभाषा के अनुसार भी देखा जाय तो कोई भी व्यक्ति अपना कर्तव्य ईमानदारी से नही करता हो, तो वह भ्रष्टाचार कहलाता है ।

आज की परिस्थिति को देखिए ! माता-पिता, शिक्षक, देश के नागरिक,

thearyasamaj.org
परिवार, पुत्र – पुत्रियाँ, भाई – बहन आदि सभी लोग नकली बनते जा रहे है। यह भी भ्रष्टाचार ही तो है।

* आत्मा से और परमात्मा से इमानदार नहीं रहना भ्रष्टाचार है

* ज्ञान, कर्म, उपासना किये बिना भला होने की चाहना करना, भ्रष्टाचार है

* वेतन जादा लेकर कम काम करना भ्रष्टाचार है, वेतन लेकर भी जादा पैसा कमाना, टयूशन लेना भी भ्रष्टाचार है।

* ज्ञान, सेवा, श्रद्धा विश्वास आदि का धंदा करना भ्रष्टाचार है।

* समय का दुरूपयोग करना भ्रष्टाचार है।

* आत्मा की इच्छा जाने बिना उसके विपरीत चलना भ्रष्टाचार है।

* परमात्मा को न मानना, न जानना तथा उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त न करना, यह भ्रष्टाचार है।

* नीति, न्याय का पालन न करना भी तो भ्रष्टाचार ही है।

* पैसा यह तो मनुष्य की **Currency** है, परंतु परमात्मा की तो **Currency** नियत है। अच्छी नियत न रखना भ्रष्टाचार है। पैसे का भ्रष्टाचार तो क्षूद्र भ्रष्टाचार है, उसको उतना महत्व नहीं, किन्तु पैसे के भ्रष्टाचार से भयंकर परिणाम देनेवाले भ्रष्टाचारों की चर्चा करना यह भी यहाँ प्रासंगिक होगा।

* ज्ञान के क्षेत्र में भ्रष्टाचार
* राजनीति में भ्रष्टाचार
* आचरण में भ्रष्टाचार
* धर्मकारण में भ्रष्टाचार
* शिक्षा में भ्रष्टाचार
* समाजकारण में भ्रष्टाचार
* दंड में भ्रष्टाचार
* देश में, विश्व में भ्रष्टाचार
* उपासना में भ्रष्टाचार
* मानवमात्र में भ्रष्टाचार
* नियत में भ्रष्टाचार
* पर्यावरण में भ्रष्टाचार
* व्यक्ति व्यक्ति में भ्रष्टाचार
* अंतरिक्ष में भ्रष्टाचार
* परिवार में भ्रष्टाचार
* समाज में भ्रष्टाचार

आज केवल पैसों का ही भ्रष्टाचार दिख रहा है। उसे सरकार ने बन्द करना चाहिए, यह भावना भी सबके मन में घर कर गयी है। पैसों के भ्रष्टाचार के पीछे भी प्रवृत्ति ही कारण है। भोगवाद के पीछे लगना, मन के पीछे लगना, परिग्रह के पीछे लगना, ऐशो आर न में रहने की इच्छा रखना, केवल भौतिकवादी बनना ये सभी बातें पैसों के भ्रष्टाचार निर्मिति के कारण हैं। इसनें मानव के अज्ञान और गलत प्रवत्ति ही जादा काम करती है। **'परांचि खानि व्यतृणत् स्वयम्भु....।'** इस उपनिषद वचन के अनुसार मन और इन्द्रियों का स्वभाव ही भोग की ओर दौडने का है। यह स्वभाव बडा घातक भी है। मन और इन्द्रियों को संयमित न रखने से मनुष्य अनिष्ठ व बुरी अवस्थाओं तक पहुंचता है

thearyasamaj.org

आज पैसा ही प्रमुख हो गया है। अधिक से अधिक पैसा जमा करके जादा से जादा आराम करने की प्रवृत्ति बढती जा रही है।

* एक मजदूर भी आज काम कम और जादा पैसा चाहने लगा है।

* हर व्यक्ति कम से कम समय में जादा से जादा पैसा कमाना चाह रहा है। इसी होड के कारण व्यक्ति अनेक युक्तियाँ अपनाकर बदनियत का (असत्य का) मार्ग चुन रहा है।

* दूधवाला जादा पैसा कमाने के चक्कर में दूध में पानी डाल रहा है, यूरिया का दूध बनाकर बेच रहा है, मिलावट कर रहा है।

* तेलवाला तेल में व व्यापारी अन्नधान्य में मिलावट करके अधिक से अधिक कमाई करने के मनसुबे रच रहा है।

* वेतनभोगी लोग अधिक वेतन से पैसा पाकर खूश नहीं है, वे उपर की कमाई करना चाहते हैं। लोगों के काम में रोडा डालकर जो कमाई की है, उसका उपयोग (दुरूपयोग) करके वह भोगवाद की ओर दौडना चाहता है, व्यसनों में मौज उडाने के लिए उसे पैसा चाहिए।

* एक अफसर वेतन होते हुए भी काम के जादा पैसे लेता है, जादा पैसों की लालच में काम में गडबडी करता है, अपनी नीयत बिगाडता है तथा अपना कर्तव्य भुला देता है।

* जनता भी अपना अयोग्य (गलत) व अवैधानिक काम करने के लिए तथा स्वार्थ साधने के लिए सरकारी अधिकारी को, न्यायाधीश को व नेताओं को पैसे (घूस) देती है। अब इसमें एक बात महत्वपूर्ण है। किसी अधिकारी ने किसी व्यक्ति का काम जल्दी किया, ठीक-ठाक किया, अच्छी सलाह दी और उसका फायदा कर दिया। ऐसी हालत में अधिकारी ने पैसे की अपेक्षा न भी की हो, तो भी वह व्यक्ति खुशी से उसे कुछ देना चाहे तो वह क्या भ्रष्टाचार होगा ?

इस प्रसंग में अधिकारी बदनियत से काम नहीं कर रहा है। 'पैसे दिये, तो ही काम करूंगा!' ऐसा कहकर परेशान नहीं कर रहा है। अतः यह भ्रष्टाचार के अंतर्गत नहीं आता। क्योंकि भ्रष्टाचार नीयत पर निर्भर करता है।

* खराब नीयत रखना, समय पर काम नहीं करना, कुछ तो अडंगा डालना, **कानूननियम में नहीं बैठता,** ऐसा कहना और काम नहीं करना यह भ्रष्टाचार है।

* जनता और संस्थायें आज ऐसे ही पैसों का घपला कर रही है। गलत खर्चे बताकर, घोटाले करके, पैसा कमाने के पीछे खराब नीयत और भोगवादी प्रवृत्ति कारण है।

(शेष अगले अंक में....)

-आर्य समाज परली-वैजनाथ
४३१५१५ जि. बीड
मो. ९४२१९५१९०४

thearyasamaj.org

सदाचार का महत्व

संकलक- लक्ष्मण आर्य

आचाराद् विच्युतो विप्रो न वेदफलमश्नुते ।
आचारेण तु संयुक्तः सम्पूर्णफलभाग् भवेत् ।।

अर्थः- जो व्यक्ति विद्वान होकर सदाचार से हीन है, उसे वेदों के पढने का कुछ भी फल नहीं मिलता है और जो सदाचारी है, यह वेदाध्ययन के सम्पूर्णफल प्राप्त करता है ।

सर्वलक्षणहीनोऽपि यः सदाचारवान् नरः ।।
श्रद्दधानोऽनसूयश्च शतवर्षाणि जीवति ।।

अर्थः- जो सदाचारी व्यक्ति है, वह सब प्रकार के उत्तम लक्षणों से और योग्यताओं से हीन होने पर भी श्रद्धालु और किसी पर दोषोरोपण न करके सौ वर्ष तक जीवित रहता है ।

दुराचारो हि पुरूषो लोके भवति निन्दितः ।
दुःखभागी च सततं व्याधितोऽल्पायुरेव च ।।

अर्थः-- जो पुरूष आचार से हीन होता है, वह लोक में सदा निन्दित होता है, निरन्तर दुःख भोगता रहता है और रोगादि से ग्रस्त रहकर अल्प आयु वाला हो जाता है । अर्थात् समय से पूर्व ही मृत्यु को प्राप्त करता है ।

शील प्रधानं पुरूषं तद् यस्येह प्रणष्यति ।
न तस्य जीवितेनार्थो न धनेन न बन्धुभिः ।।

अर्थः-सदाचार ही मनुष्य का मुख्य धन है । जिस का सदाचार नष्ट हो जाता है, उसके धनवान होने से, बन्धु सम्पन्न होने तथा दीर्घ जीवन से भी क्या लाभ ? अर्थात् उनका धन सम्पन्न होना और जीवन प्राप्त करना व्यर्थ है ।

वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमेति च याति च ।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः ।।

अर्थः- मनुष्य को सदाचार की रक्षा प्रयत्न पूर्वक करनी चाहिये, लोक में भौतिक सम्पदा तो आती-जाती रहती है । जो धन से हीन है, वे वास्तव में हीन नहीं है, किन्तु जो सदाचार से हीन है, वह तो सर्वथा ही नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है ।

वृत्ततस्त्वहीनानि कुलान्यल्पधनान्यपि ।
कुलसंङ्ख्यां च गच्छन्ति कर्षन्ति च महद्यशः ।।

अर्थः- जो परिवार सदाचार से हीन नहीं है, वे कम धनवाले होते हुए भी उत्तम कुलों में गणना प्राप्त करते हैं और जीवन में महान् यश को अर्जित करते हैं ।

(मनुस्मृति व महाभारत से उध्दृत)

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां मा प्रमदितव्यम् ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,

आर्यसमाज परली वै. जि.बीड

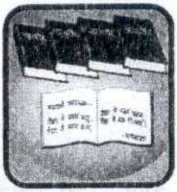

मानव जीवन कल्याण वेदज्ञान प्रचार अभियान-२०१४

(श्रावणी उपकर्म पर्व- वेद प्रचार मास)

२७ जुलाई से २४ अगस्त २०१४

◆◆◆ राज्यस्तरीय कार्यक्रम ◆◆◆

विद्वानों के नाम	आर्य समाजें	श्रावणी कार्यक्रम
डॉ. रघुवीरजी वेदालंकार	आर्य समाज, किल्ले धारूर	२७ जुलाई से १ अगस्त २०१४
(वैदिक विद्वान) ,दिल्ली	आर्य समाज, अंजनडोह/केज	२,३ अगस्त २०१४
एवं	आर्य समाज, परली वैजनाथ	४ से १० अगस्त २०१४
पं.सुखपालजी आर्य	आर्य समाज,गांधी चौक, लातूर	११ से १७ अगस्त २०१४
(भजनोपदेशक)	आर्य समाज, सोलापुर	१८ से २४ अगस्त २०१४
सहारनपुर (उ.प्र.)		
प्रो. डॉ. महावीरजी आचार्य	आर्य समाज, संभाजी नगर	१३ से १७ अगस्त २०१४
(वैदिक विद्वान) हरिद्वार एवं		
आचार्या डॉ. नंदिता शास्त्री		
(वैदिक विदुषी) - वाराणसी		
पं. सुरेन्द्रपालजी आर्य(भजनोपदेशक), नागपुर		
डॉ. कमलनारायणजी आचार्य	आर्य समाज, रामनगर, लातूर	२७ जुलाई से २ अगस्त २०१४
(वैदिक विद्वान्)	आर्य समाज, उमरगा	३ से ५ अगस्त २०१४
रायपुर (छत्तीसगड)	आर्य समाज, औराद ता. उमरगा	६ से ८ अगस्त २०१४
एवं	आर्य समाज, गुंजोटी	९ से ११ अगस्त २०१४
पं. अमरेशजी आर्य	आर्य समाज, निलंगा	१२ से १७ अगस्त २०१४
(भजनोपदेशक)मुजफ्फरनगर	आर्य समाज, औराद शहाजानी	१८ से २४ अगस्त २०१४
डॉ. विश्वपालजी वेदालंकार	आर्य समाज, उदगीर जि.लातूर	२८ जुलाई से ३ अगस्त २०१४
(वैदिक विद्वान्)....	आर्य समाज, देगलुर जि. नांदेड	४ से १० अगस्त २०१४
एवं	आर्य समाज, शहापुर ता. देगलुर	११ से १३ अगस्त २०१४
पं. शक्तिसिंहजी आर्य	आर्य समाज, धर्माबाद जि. नांदेड	१४ से २० अगस्त २०१४
(भजनोपदेशक), किल्ले धारूर	आर्य समाज,मुदखेड जि. नांदेड	२१ से २४ अगस्त २०१४

thearyasamaj.org

पं.ब्रिजेशजी शास्त्री	आर्य समाज, भगुर जि.नाशिक	२७ से २९ जुलाई २०१४
(वैदिक विद्वान्)	आर्य समाज, देवळाली कँप	३० जुलाई से १ अगस्त २०१४
गाज़ियाबाद (उ.प्र.)	आर्य समाज, पंचवटी नाशिक	२ से ४ अगस्त २०१४
एवं	आर्य समाज, सटाना नाका, मालेगांव	५ से ७ अगस्त २०१४
पं. प्रकाश मुनिजी आर्य	आर्य समाज, धुलिया (धुळे)	८ से १४ अगस्त २०१४
(भजनोपदेशक) खेडाखुर्द	आर्य समाज, आष्टे	१५ अगस्त २०१४
	आर्य समाज, वेदमंदिर, जलगांव	१६ से १८ अगस्त २०१४
	आर्य समाज, इदगांव ता. जलगांव	१९, २० अगस्त २०१४
	आर्य समाज, नशिराबाद ता. जलगांव	२१,२२ अगस्त २०१४
	आर्य समाज, भुसावळ	२३, २४ अगस्त २०१४

आचार्य श्री आनंदजी पुरूषार्थी	आर्य समाज, वारजे मालवाडी, पुणे	२८ जुलाई से ३ अगस्त २०१४
(अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता)	आर्य समाज, पिंपरी, पुणे	४ से १० अगस्त २०१४
होशंगाबाद (म.प्र.)	आर्य समाज,नानापेठ, पुणे	११ से १७ अगस्त २०१४
एवं	आर्य समाज, रेणापूर जि. लातूर	१८ से २४ अगस्त २०१४
पं. संदीपजी आर्य		
(भजनोपदेशक) मुजफ्फरनगर		

पं. माधवरावजी देशपांडे एवं	आर्य समाज,ओ३म् सोसायटी, पुणे	१८ अगस्त २०१४
पं. विश्वनाथजी शास्त्री	आर्य समाज, खडकी पुणे	१९ अगस्त २०१४
पं. गणेशजी आर्य	आर्य समाज, खडकवासला पुणे	२० अगस्त २०१४
(वैदिक विद्वान) (पुणे)	आर्य समाज, मंचर पुणे	२१ अगस्त २०१४
	आर्य समाज, अहमदनगर	२२ से २४ अगस्त २०१४

पं. आर्यमुनिजी	आर्यसमाज,तुळजापुर (अँड.जगताप)	२७ जुलाई २०१४
(वैदिक विद्वान)	आर्य समाज, धाराशिव	२८ से ३० जुलाई २०१४
गुरूकुल परली-वै.	आर्य समाज, तेरखेडा ता.वाशी	३१ जुलाई २०१४
एवं	आर्य समाज, कळंब जि धाराशिव	१ से ३ अगस्त २०१४
पं. प्रतापसिंहजी चौहान	आर्य समाज, वाशी जि. धाराशिव	४ से ६ अगस्त २०१४
(सभा-भजनोपदेशक)	आर्य समाज, ईट ता.वाशी	७ अगस्त २०१४
परली-वै.	आर्य समाज, घाटपिंपरी ता.वाशी	८ से १० अगस्त २०१४
	आर्य समाज, गिरवली ता.वाशी	११ अगस्त २०१४
	आर्य समाज चांदवड ता.वाशी	१२ अगस्त २०१४
	आर्य समाज, अंजनसोंडा ता. वाशी	१३ अगस्त २०१४

पं. मनोहरजी शास्त्री	आर्य समाज, मानेवाडी ता.बीड	१४ अगस्त २०१४
पं. उद्धवजी शास्त्री	आर्य समाज, बीड	१५, १६ अगस्त २०१४
(वैदिक विद्वान) बीड		

thearyasamaj.org

पं.राजवीरजी शास्त्री	आर्य समाज, शिवणखेड	२८ जुलाई से ३
(वैदिक विद्वान) सोलापूर	आर्य समाज, गांजूर	अगस्त २०१४
पं. सोगाजी घुन्नर, हदगांव		४ अगस्त २०१४
पं. अशोकजी कातपुरे		
(भजनोपदेशक)		
पं.श्रीरामजी आर्य	आर्य समाज, टाका ता. औसा	३, ४ अगस्त २०१४
(वैदिक विद्वान) लातूर	आर्य समाज, बेलकुंड ता. औसा	५ अगस्त २०१४
पं. अरूणकुमारजी सांगळे	आर्य समाज, रामेगांव ता. औसा	६, ७ अगस्त २०१४
(भजनोपदेशक) सोलापूर	आयै समाज मोगरगा ता. औसा	८ से १० अगस्त २०१४
	आर्य समाज मंगरूळ, ता. औसा	११,१२ अगस्त २०१४
	आर्य समाज किल्लारी ता. औसा	१३ अगस्त २०१४
	आर्यसमाज, दैठणा, ता.शि.अनंतपाळ	१४ अगस्त २०१४
	आर्य समाज, धनेगांव ता.उदगीर	१५,१६ अगस्त २०१४
	आर्य समाज, वलांडी ता.देवणी	१७ अगस्त २०१४
	आर्यसमाज, टाकळी ता.उदगीर	१८ अगस्त २०१४
पं. सुधाकरजी शास्त्री	आर्य समाज, जालना	२७ , २८ जुलाई २०१४
(वैदिक विद्वान) सभा उपदेशक	आर्य समाज, परभणी	२९ से ३१ जुलाई २०१४
एवं	आर्य समाज, हिंगोली	१ से ३ अगस्त २०१४
पं. सुभाषजी गायकवाड	आर्य समाज, हदगाव जि. नांदेड	४ से १० अगस्त २०१४
(भजनोपदेशक) सोलापूर	आर्य समाज, तामसा ता. हदगाव	११ से १३ अगस्त २०१४
	आर्य समाज, कंजारा ता. हदगाव	१४, १५ अगस्त २०१४
	आर्यसमाज, निवघा (बा.) ता. हदगाव	१६ से १८ अगस्त २०१४
	आर्य समाज, तळणी ता. हदगाव	१९ से २१ अगस्त २०१४
	आर्य समाज, नांदेड	२२ से २४ अगस्त २०१४
पं. नारायणरावजी कुलकर्णी	आर्य समाज, आखाडा बाळापुर	११, १२ अगस्त २०१४
(वैदिक विद्वान) नांदेड	आर्य समाज, जरोडा ता. कळमनुरी	१३ अगस्त २०१४
एवं	आर्य समाज, घोडा ता. कळमनुरी	१४ अगस्त २०१४
पं. सोगाजी घुन्नर	आर्य समाज, येहळेगाव ता. कळमनुरी	१५, १६ अगस्त २०१४
(भजनोपदेशक) हदगांव	आर्य समाज, मरडगा ता. कळमनुरी	१७ अगस्त २०१४
	आर्य समाज, भाटेगाव ता. कळमनुरी	१८, १९ अगस्त २०१४
	आर्य समाज, डोंगरगांव ता. हदगाव	२० अगस्त २०१४
प्राचार्य देवदत्तजी तुंगार एवं	आर्य समाज, किनवट जि. नांदेड	२, ३ अगस्त २०१४
सौ. डॉ. शारदादेवी तुंगार	आर्य समाज, उमरी जि. नांदेड	४, ५ अगस्त २०१४
(वैदक विद्वान्) नांदेड		

thearyasamaj.org

पं. विवेकजी शास्त्री (कानडे) वैदिक विद्वान, पन्हाळा	आर्य समाज, लक्ष्मीपथ, कोल्हापुर	१७ से १८ अगस्त २०१४
पं. अनिलजी आर्य	आर्य समाज, मुखेड	२७ से २८ जुलाई २०१४
पं. सुरेशजी चिन्तावर	आर्य समाज, बाराहळ्ळी	२९ जुलाई २०१४
(वैदिक विद्वान) धर्माबाद	आर्य समाज, कंधार	३० से ३१ जुलाई २०१४
पं. लक्ष्मणरावजी आर्य	आर्य समाज, घटांग्रा	१४ से १५ अगस्त २०१४
पं. संभाजीराव पवार (वैदिक विद्वान)	आर्य समाज, राणीसावरगांव	१६, से १७ अगस्त २०१४
पं. ब्रह्मनादमुनि (भजनोपदेशक)		
पं. धोंडीरामजी शेप गुरूजी	आर्य समाज, अंधोरी	१६ से १७ अगस्त २०१४
(जिंतूर)	आर्य समाज, येलदरी	१८ अगस्त २०१४
पं. विज्ञानमुनिजी	आर्य समाज, अहमदपूर	२७ से २८ जुलाई २०१४
पं. दयानन्दजी शास्त्री	आर्य समाज, चाकूर	२९ जुलाई २०१४
(परळी)	आर्य समाज, वडवळ नागनाथ	३० से ३१ जुलाईं २०१४
	आर्य समाज, बनसारोळा	१५ से १६ अगस्त २०१४
	आर्य समाज, शिराढोण	१७ से १८ अगस्त २०१४
पं. चंद्रकांतजी वेदालंकार वैदिक विद्वान, (हिंगोली)	आर्य समाज, जिंतूर	२३ से २४ अगस्त २०१४
प्रा. लक्ष्मीकांतजी शास्त्री वैदिक विद्वान (माजलगांव)	आर्य समाज, अंबाजोगाई	२७ से २९ जुलाई२०१४
पं.भानुदासरावजी देशमुख वैदिक विद्वान (अंबाजोगाई)		
प्रो. ओमप्रकाशजी विद्यालंकार (होलीकर) वैदिक विद्वान (लातूर)	आर्य समाज, स्वातंत्र्य सैनिक कॉलनी लातूर	२७ से २९ जुलाई २०१४
श्रीमती सावंतबाई भजनोपदेशीका (लातूर)		
पं. धर्ममुनिजी	आर्य समाज, हनुमंतवाडी	४ से ५ अगस्त२०१४
पं. माणिकरावजी टोम्पें	आर्य समाज, अंबुलगा	६ से ७ अगस्त २०१४
वैदिक विद्वान (उदगीर)	आर्य समाज, कासारशिर्शी	८ से ९ अगस्त २०१४
पं. शिवाजीराव निकम	आर्य समाज, सय्यद अकुलगा	१० से ११ अगस्त २०१४
(भजनोपदेशक) मोगरगा	आर्य समाज, उजेड	१२ से १३ अगस्त २०१४

thearyasamaj.org

पं. ज्ञानकुमारजी आर्य	आर्य समाज, हलगरा	७ से ८ अगस्त २०१४
वैदिक विद्वान (लातूर)	आर्य समाज, बोटकुळ	९ से १० अगस्त २०१४
	आर्य समाज, बढुर	१८ से १९ अगस्त २०१४
	आर्य समाज, कासारबालकुंदा	२० से २१ अगस्त २०१४
पं. प्रकाशजी कच्छवा	आर्य समाज, नदीवाडी	२७ से २८ जुलाई २०१४
प्रा.विजयकुमारजी कुलकर्णी	आर्य समाज, मदनसुरी	२ से ३ अगस्त २०१४
(औराद-शहा.)	आर्य समाज, येलमवाडी	४ से ५ अगस्त २०१४
प्रो.चंद्रेश्वरजी शास्त्री	आर्य समाज, साकोळ	८ से १० अगस्त २०१४
(वैदिक विद्वान)	आर्य समाज, सुगाव	१७ से १८ अगस्त २०१४
सौ. कांचनदेवी शास्त्री		
(भजनोपदेशीका,लातूर)		
प्रो.डॉ.नरेंद्रजी शास्त्री	आर्य समाज, लोहारा	२७ से २९ जुलाई २०१४
(वैदिक विद्वान)	आर्य समाज, हाळी	९ से ११ अगस्त २०१४
सौ.पं.सुमनबाई चौहान		
भजनोपदेशीका (उदगीर)		
पं. प्रशांतकुमारजी शास्त्री	आर्य समाज, मांडवा	२८ से २९ जुलाई २०१४
पं. ब्रह्मनाथमुनिजी (परळी)	आर्य समाज, सारडगांव	२ से ३ अगस्त २०१४
प्रा.अरूणजी शास्त्री (चव्हाण)	आर्य समाज, माजलगांव	२ से ३ अगस्त २०१४
पं. रविन्द्रजी शास्त्री (खोडवे)	आर्य समाज, घाटनांदूर	१७ से १८ अगस्त २०१४
वैदिक विद्वान		
प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य	आर्य समाज, करडखेल	१६ से १८ अगस्त २०१४
(परळी)	आर्य समाज, गंगाखेड	२४ अगस्त २०१४
प्रा.तानाजी शास्त्री	आर्य समाज, अजनी	२७ से २९ जुलाई २०१४
प्रा.नरेशजी शास्त्री (परळी)		
प्रा.शरदचंद्रजी डुमने	आर्य समाज, मुशिराबाद	२१ से २२ अगस्त २०१४
(लातूर)	आर्य समाज, कव्हा	२३ से २४ अगस्त २०१४
पं.डॉ.चंद्रशेखरजी लोखंडे	आर्य समाज, होळी	१७ से १८ अगस्त २०१४
(लातूर)		
पं.शेरसिंहजी शास्त्री, (लातूर)	आर्य समाज, पानचिंचोली	१८ से १९ अगस्त २०१४

thearyasamaj.org

पं. विजयकुमारजी अग्रवाल	आर्य समाज, मानवत	१३ से १४ अगस्त २०१४
पं. बाबुरावजी आर्य (परभणी)	आर्य समाज, कौसाडी	१५ से १६ अगस्त २०१४
डॉ. प्रकाशजी कदम	आर्य समाज, पुर्णा	२३ से २४ अगस्त २०१४
पं.दिगंबरजी देवकते (परभणी)		
पं. अर्जुनरावजी सोमवंशी	आर्य समाज, नेत्रगांव	१५ से १६ अगस्त २०१४
पं. अंनदमुनिजी	आर्य समाज, बोरूळ	१७ से १८ अगस्त २०१४
(उदगीर)	आर्य समाज, हेर	१९ अगस्त २०१४
पं. वेदमुनिजी वेदालंकार	आर्य समाज, कदेर	१३ से १४ अगस्त २०१४
पं. दिनकररावजी देशपांडे	आर्य समाज, बेडगा	१५ से १६ अगस्त २०१४
प्रा.विठ्ठलराव जाधव	आर्य समाज, माडज	१७ से १८ अगस्त २०१४
(गुंजोटी/उमरगा)	आर्य समाज, मुरूम	१९ से २० अगस्त २०१४
	आर्य समाज, सास्तुर	२१ से २२ अगस्त २०१४

* आर्य समाजों को सूचनाएं *

१) सभा ने दिया हुआ कार्यक्रम के अनुसार ही कार्यक्रम करें उसमें बदल ना करें।

२) विद्वानों को पुर्व कार्यक्रम स्थान से लाना तथा अगले स्थान पहुँचाने का काम समय पर ठीक ढंग से करें, ताकि उन्हे असुविधाएँ न हो।

३) सभा द्वारा भेजे गये विद्वानों से ही कार्यक्रमों का आयोजन करें।

४) विद्वानों के निवास एवं भोजनादि की व्यवस्था उत्तम प्रकार से करें तथा उनके साथ आदरपूर्वक व्यवहार होवें

५) सुबह शाम कार्यक्रंम आर्य समाज में ही लेवें।

६) प्रातः १० बजे से १ बजे तक स्कूल, कॉलेज में व्याख्यान का आयोजन करें।

७) श्रावणी कार्यक्रम के दौरान 'संस्कृत दिन' समारोह का भी आयोजन करें।

८) पारिवारिक सत्संग दोपहर ३ बजे ६ बजे के समय में रखें।

९) आर्य समाज के सभी सदस्यों को श्रावणी कार्यक्रम की सफलता के लिए समय देने को कहे।

१०) कार्यक्रम के लिए हार्मोनियम (पेटी), तबला और तबलावादक की व्यवस्था आप अपनी ओरसे करें।

११) श्रावणी के निमित्त निम्न कार्यक्रमों का भी आयोजन करें।

विनीत - प्रधान, मन्त्री व अन्य पदाधिकारी, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

-: संपर्क :-

राजेंद्र दिवे (मन्त्री)	लक्ष्मण आर्य वेदप्रचारअधिष्ठाता	डॉ.ब्रह्ममुनि (परामर्शदाता)
९८२२३६५२७२	९४२०२६९९२४	९४२१९५१९०४

thearyasamaj.org

शोक समाचार श्री दत्तरावजी गांगजी का देहावसान

आर्य समाज उदगीर (जि.लातूर) के पूर्व मन्त्री तथा सक्रिय आर्य कार्यकर्त्ता श्री दत्तारावजी रामकिशनजी गांगजी का दि. २३ जून २०१४ की रात्रि में ९ बजे अल्पसी बिमारी के कारण दुःखद आकस्मिक निधन हुआ।

लगभग २० दिनों से वे मस्तिष्क की बिमारी से पीडित थे। मृत्युसमय उनकी आयु ६८ वर्ष की थी। वे अपने पश्चात् पत्नी श्रीमती आशा, दो पुत्र आदित्यरत्न, आश्वलायन, एक विवाहित कन्या सौ. साक्षी राऊत, बहु, दामाद तथा पौत्रादियों को छोडकर परलोक सिधार गये। दिवंगत श्री गांगजी आर्य समाज के उत्साही कार्यकर्त्ता व प्रचारक के रूप में पहचाने जाते थे। स्थानीय आर्य समाज, उदगीर की गतिविधयों को बढाने में उनका काफी योगदान रहा है। महर्षि दयानन्द की वैदिक विचारधारा को प्रसारित करने में उन्होंने वैयक्तिकरूप से भी योगदान रहा है। जातिपाती के बन्धनों को तोडकर उन्होंने अपना अन्तर्जातीय विवाह किया। अपने पुत्र व कन्या के साथ ही अन्य लगभग सौ से अधिक युवकों व युवतियों को मनुष्यकृत जातिव्यवस्था को तोडकर अन्तर्जातीय विवाह करने हेतु प्रेरणाएं दी। व्यसनमुक्ति केन्द्र चलाकर आपने नौजवानों को बुरे व्यसनों से परावृत्त किया।

उदगीर के प्रसिद्ध आर्य शिक्षालय श्री श्यामलाल स्मारक विद्यालय में आपने हिन्दी राष्ट्रभाषा विषय का बडी निष्ठा के साथ अध्यापन किया। इसके साथ ही राष्ट्रीय छात्रसेना (एन.सी.सी.) के यूनीट को भी कुशलता के साथ सम्भाला और अनेकों छात्रों में शरीरबल संवर्धन, राष्ट्रप्रेम, नीतिमूल्य आदि बातों की स्थापना की। सन् २००५ में वे इस विद्यालय सेवानिवृत्त हुए थे। दुर्भाग्य से त्वचारोग के साथ ही मष्तिष्क की बिमारी से आप ग्रस्त हो गये और अन्ततोगत्वा अल्पावधी में ही आप संसार से विदा हुए। स्व.गांगजी के पार्थिवपर दूसरे दिन प्रातः १२ बजे पूर्ण वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार किये गये। पं. प्रकाशवीर आर्य, पं. धर्ममुनिजी व पं. माणिकराव टोम्पें ने यह अन्तेष्टिकर्म पूर्ण किया। इस अवसर महाराष्ट्र सभा के मार्गदर्शक डॉ. ब्रह्ममुनिजी, आर्य समाज उदगीर के पदाधिकारी, कार्यकर्त्ता तथा शैक्षिक, सामाजिक व अन्य क्षेत्रों के गणमान्य लोग उपस्थित थे। तीसरे दिन उनके आनन्दनगर (नांदेड नाका) स्थित घर पर पं. धर्ममुनिजी के पौरोहित्य में शान्तियज्ञ सम्पन्न हुआ।

दिवंगत आत्मा की शान्ति व सद्‌गति हेतु कामना व भावपूर्ण श्रद्धांजलि!

thearyasamaj.org

सार्वदेशिक सभा व केरल आर्यप्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

कालिकत (केरल) में १५ अगस्त २०१४ को

विशाल वेदाश्रम का शिलान्यास व विराट यज्ञ

बडे हर्ष का विषय है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व केरल आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से लगभग दो एकड की भूमि में बन रहें दक्षिण भारत के पहले विशाल वेदाश्रम (वेदपाठशाला) का शिलान्यास समारोह व विराट रूप में बृहद् विश्वशांति यज्ञ का आयोजन हो रहा है। इस कार्यक्रम में केरल के हजारों मल्यालम भाई-बहन सम्मिलित हो रहे हैं। अतः देश के सभी आर्यजन भारी संख्या में इस समारोह में भाग लेवें। निवास व भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की गई है। अधिक जानकारी हेतु श्री विनयजी आर्य (०९९५८१७४४४१) से सम्पर्क करें।

सार्वदेशिक सभा के तत्त्वावधान में हरिद्वार में

राष्ट्रीय आर्य कार्यकर्त्ता संगोष्ठी तथा साधारण सभा बैठक

दि.२९,३० व ३१ अगस्त २०१४/ स्थान-गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार

-* निवेदन / सूचना *-

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के अन्तर्गत आनेवाली सभी प्रान्तीय सभाओं से निवेदन है कि सार्वदेशिक सभा के **साधारण सदस्यों** की **महत्वपूर्ण बैठक** तथा राष्ट्रीय स्तर पर **आर्य कार्यकर्त्ता संगोष्ठी** का उपरोक्त तिथियों पर आयोजन किया गया है। इसमें प्रान्तीय सभाओं द्वारा स्वीकृत साधारण सदस्य ही भाग ले सकते हैं। सभी प्रान्तीय सभायें अपने साधारण प्रतिनिधियों की जो सूची सार्वदेशिक सभा को भेजेंगी, वे ही आर्यजन **साधारण सभा प्रतिनिधि** के रूप में पात्र रहेंगें। अतः सभी प्रान्तिय सभाओं के **सार्वदेशिक साधारण सदस्य** उपरोक्त त्रीदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी व बैठक में सम्मिलित होवें। पधारनेवाले सभी प्रतिनिधियों की भोजन व निवास व्यवस्था की गई है।

सभी साधारण सदस्य २८ अगस्त की रात्री तक हरिद्वार पहुंचे। अधिक जानकारी के लिये मन्त्री श्री प्रकाश आर्य अथवा श्री विनय आर्य (०९९५८१७४४४१) से सम्पर्क करें।

निवेदक- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,

कैम्प कार्यालय-आर्य समाज, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली

thearyasamaj.org

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

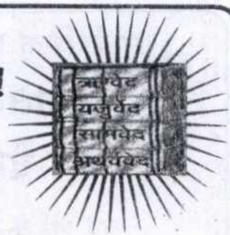

वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. 333/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

- मानवकल्याणकारी उपक्रम -

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

माझ्या मराठीचा बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ॥ (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद सन्देश

सर्वात सूक्ष्म 'आत्मा'

इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः।
मनसश्च परा बुद्धिः बुद्धेः आत्मा महान् परः॥

(कठोपनिषद् ३/१०)

पाच कर्म इंद्रिये व पाच ज्ञान इंद्रिये यांपेक्षा सूक्ष्म त्यांचे विषय (रूप, रस, गंध, स्पर्श, शब्द) आहेत. त्याविषयांहुनही अधिक सूक्ष्म मन आहे. मनापेक्षाही सूक्ष्म बुद्धी आहे. आणि बुद्धिपेक्षाही अतिशय सूक्ष्म व महान असा आत्मा आहे.

दयानंदांची अमृतवाणी

माणूस कोणास म्हणावे ?

जो मननशील असेल आणि इतरांची सुखदुःखे व लाभहानी ही आपलीच आहेत, असे समजेल, त्यालाच मनुष्य म्हणावे. माणसाने अन्याय करणाऱ्या बलवानालाही भिता कामा नये व धर्मपरायण दुबळ्यालाही भ्यावे. इतकेच नव्हे तर आपल्या सर्व सामर्थ्यानिशी धर्मात्म्यांचे रक्षण, उन्नती व प्रियाचरण करावे. मग ते धर्मात्मे अत्यंत अनाथ, दुर्बळ व गुणरहित असले तर हरकत नाही, तसेच जर एखादा अधर्मी चक्रवर्ती, सनाथ महाबलवान आणि गुणवान असला तरीही त्याचा नाश, अवनती व अप्रियाचरण माणसाने सदैव करावे. अर्थात शक्य असेल तोपर्यंत अन्याय करणाऱ्यांच्या सामर्थ्याची हानी व न्यायी लोकांच्या सामर्थ्याची उन्नती त्याने नेहमी करावी. हे करीत असताना त्याला कितीही दारूण दुःख भोगावे लागले. किंबहुना प्राणही द्यावा लागला तरी त्याने या माणुसकीरूपी धर्माचा त्याग कधीही करू नये.

(सत्यार्थ प्रकाश-तिसरा समुल्लास)

thearyasamaj.org

सुभाषित रसास्वादः

- खरे मानवी जीवन -

यद् जीव्यते क्षणमपि प्रथितं मनुष्यैः
विज्ञानशौर्यविभवार्यगुणैः समेतम् ।
तद् नाम जीवितमिह प्रवदन्ति तज्ज्ञा :
काकोऽपि जीवति चिरं च बलिं च भुङ्क्ते ॥

अर्थः- ज्ञान, पराक्रम, वैभव अशा (आर्य) श्रेष्ठ संस्कृतीच्या गुणांनी नटलेले माणसांचे जे जीवन ते क्षणभराचे असले तरी तेच खरे मानवी जीवन होय, असे जाणकार म्हणतात. नाही तर कावळा देखील खूप वर्षे जगतो (आणि माणसांनी आपल्या अन्नातून केवळ भूतदया किंवा धार्मिक रूढी म्हणून पूढे टाकलेली चार) भाताची शिते खाऊन आपले पोट भरतो. (हितोपदेश २.४३)

गाथा वाचू दयानंदाची **बोधकथा क्र. ५१**

एकलिंग महादेवाच्या गादीचे प्रलोभन झिडकारले

-डॉ. भवानीलाल भारतीय

तसे पाहिले तर स्वामीजींच्या सैद्धांतिक निष्ठेबाबत व त्यांच्या सत्या विषयीच्या प्रबळ आग्रहाविषयी महाराजे श्री सज्जनसिंह चांगल्या प्रकारे परिचित होते. पण एके दिवशी जणू कांही त्यांनी स्वामीजींच्या दृढ चारित्र्याची परीक्षा घेण्याच्या हेतूने त्यांच्या समोर एक नवा प्रस्ताव मांडला. ते म्हणाले - 'स्वामीजी महाराज ! सध्या आपण वेदांवरील भाष्यलेखनाचे कार्य करीत आहात. हे कार्य परिश्रमसाध्य तर आहेच, पण त्याचबरोबर खर्चीक देखील आहे. या कार्यासाठी तुम्ही स्वतःचे एक वैदिक मुद्रणालय सुद्धा उघडले आहे. यात अनेक कर्मचारी कार्यरत आहेत. मी आपल्या आर्थिक प्रश्नाची सोडवणूक करण्याच्या उद्देश्याने एक प्रस्ताव मांडू इच्छितो. मला खात्री आहे की आपण यास मान्यता द्याल ! मला याची पूर्णपणे जाणिव आहे की तुम्ही मूर्तिपूजेचे विरोधी आहात, पण मठ व मंदिरांद्वारे प्राप्त होणाऱ्या मिळकतीला वेदभाष्यांकरिता स्वीकारण्यास आपली कांहीच हरकत नसावी.उदयपुर शहराजवळ असलेले एकलिंग मंदिर हे केवळ एक मंदिरच नसून ते खूप मोठ्या अचल संपत्तीचे आगर आहे. जर तुम्ही एकलिंग महादेवाच्या मंदिर संस्थानाचे महंतपद स्वीकाराल, तर या सर्व संपत्तीचे अधिकारी व्हाल. तुम्हाला मूर्तिपूजा करावयाची गरज नाही. हे कार्य तर वेतनधारी पुजारी लोक करीत राहतील. आपण तर केवळ महंतपदाचाच स्वीकार करावा.'

thearyasamaj.org

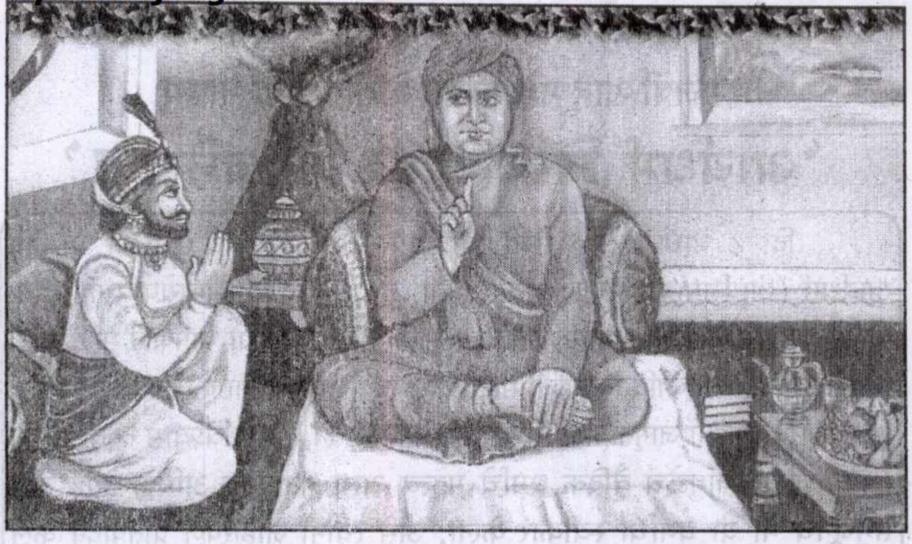

महाराणांच्या या अनोख्या प्रस्तावावर स्वामीजींनी आपली तीव्र नापसंती दर्शविली. ते आवेशात म्हणाले- 'महाराणा ! हा प्रस्ताव माझ्यासमोर ठेऊन आपण मला ईश्वराची आज्ञा भंग करण्यास बाध्य करीत आहात. खरे तर तुमचे हे राज्य एवढे लहान आहे की माझ्यासारखा ब्रह्मचारी एक धूम ठोकून याच्या सीमा ओलांडून लवकरच जाऊ शकतो. पण थोडा विचार करा की परमपिता परमेश्वराच्या या व्यापक ब्रह्मांडस्वरूपी राज्याला सोडून मी अन्यत्र कोठे जाऊ शकतो काय ? मी जे कांही करीत ते सर्व काही ईश्वर आणि वेदांची आज्ञा पालनच आहे. यापेक्षा विपरीत आचरण माझ्या करिता अशक्य आहे.' स्वामीजींच्या या स्पष्टवक्तेपणाने महाराणा प्रभावित झाले आणि ते त्यांच्या समोर नतमस्तक झाले.

('दयानंद चित्रावली'चा मराठी अनुवाद)

-३/५, शंकर कॉलनी, श्रीगंगानगर (राज.)

पं. लेखराम उपदेशक महाविद्यालय में नि:शुल्क प्रवेश

आर्य समाज परली द्वारा संचालित गुरूकुल आश्रम नंदागौळ मार्ग, परली में प्रांतीय सभा द्वारा 'पं. लेखराम उपदेशक महाविद्यालय' कार्यरत है। इसमें न्यूनत: ९ वी उत्तीर्ण छात्रों को प्रवेश दिया जाएगा। इस संस्था का तीन वर्षो का पाठ्यक्रम है, जिसमें विद्यार्थियों को वैदिक सिद्धांतों का प्रशिक्षण दिया जाता है। भविष्य में वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार हेतु उपदेशक, व्याख्याता, भजनोपदेशक, पुरोहित आदि तैयार करना यह इस महाविद्यालय का उद्देश्य है। प्रत्येक वर्ष पांच छात्रों को इस महाविद्यालय में नि:शुल्क प्रवेश दिया जाता है। भोजन, निवास तथा शिक्षा भी नि:शुल्क होती है।

thearyasamaj.org

आर्यजनहो ! वाचा आणि विचार करा !

राजर्षी शाहू महाराजांचे ऐतिहासिक भाषण

'आर्यधर्म विश्वव्यापी धर्म बनेल !'

दि. ८ मार्च १९२० रोजी सौराष्ट्रातील भावनगर येथे अखिल भारतीय आर्यधर्म (आर्यसमाज) परिषद भरली होती. त्या परिषदेच्या समारोपप्रसंगी प्रमुख पाहुणे म्हणून राजर्षी शाहू महाराजांनी केलेले हे भाषण आहे. या भाषणात महाराजांनी स्वामी दयानंदांच्या जीवितकार्याची महती गाऊन त्यांनी स्थापना केलेला वैदिकधर्मच (आर्यधर्म) देशाला जागृत करणारी रामबाण मात्रा ठरेल, असा विश्वास व्यक्त केला आहे. या कारणामुळेच **वैदिक धर्माचे महत्व अन्य मतांपेक्षा अधिक आहे असे समजूनच मी या धर्माचा स्वीकार केला**, असे त्यांनी जाहीरपणे प्रतिपादन केले आहे. स्वामी दयानदांनी सांगितलेला हा धर्म भावी काळात विश्वव्यापी बनेल, असाही आशावाद त्यांनी येथे प्रकट केला आहे.

सज्जनहो !

आपण जरा भारतवर्षाच्या गतेतिहासावर दृष्टिपात करू ! हजार वर्षापूर्वीच्या व आताच्या भारतवर्षात जमीनअस्मानाचे अंतर पडले आहे. आज पराक्रम, विद्वत्ता, धर्मशीलता, उदारतादी सद्गुण लुप्त झाले आहेत. हजारो कुसंस्कार, चालीरीती यांनी भारतवर्ष ग्रासून गेलेला पाहून कांही आश्चर्य ही वाटत नाहीसे झाले. आहे. बालविवाह, बहुविवाह, मद्यपान, स्त्रियांना शिक्षणास मज्जाव, वर्णाश्रमधर्माची अव्यवस्था वगैरे अनेक सामाजिक घातकी रूढींनी समाज निर्जीव करून टाकला आहे.

उदाहरणार्थ, वर्णव्यवस्था घ्या सपूर्ण भारत, विशेषतः महाराष्ट्रादी दक्षिण प्रांतात, ब्राह्मणेतर जातींची अवस्था अत्यंत शोचनीय आहे. ह्या जातींना पुढे सरसावण्यास व प्रगती करून घेण्यास संधीच दिली जात नाही. आज विसाव्या शतकात अस्पृश्य गणले जाणारे देखील प्राणी आहेत. त्यांचा अपराध एवढाच आहे की त्यांनी एखाद्या विशिष्ट जातीमध्ये जन्म घेतला नाही. आज भारतवर्षात ऐक्य, प्रेम व सहकार्य कोठेही पाहावयास मिळत नाही. यांचे कारण आमची स्वतःचीच मूर्खता होय. भारतवर्षामध्येच अशी मनुष्ये वर्तमान आहेत की, ज्यांना आपल्या बंधूंची छायाही आपल्यावर पडणे दुःसह होते. स्वतःचे स्वतःलाच उच्च समजणारे लोक मिथ्या जातीभिमानाच्या निशेत अगदी निमग्न होऊन राहिले आहेत व नीच म्हणविल्या जाणाऱ्या जातींवर मन मानेल तसे अत्याचार करून राहिले आहेत.

thearyasamaj.org

नवीन मनुष्याला त्याच्या योग्यतेनुसार उच्चनीच वर्ण देणे हा वैदिक आदर्श होता. मुनी लोकांनी,

धर्मचर्यया जघन्यो वर्णः
पूर्वं पूर्वं वर्णमापद्यते जाति परिवृतौ ।
अधर्मचर्यया पूर्वो वर्णः जघन्यः
जघन्य वर्णमापद्यते जाति परिवृतौ ।

असा उपदेश केला. त्या ठिकाणी पौराणिक लोकांनी **'ब्राह्मणः न जातेः ब्राह्मणः.'**अशी व्युत्पत्ती करून ब्राह्मणादी जन्मवाचक अर्थ करण्यास प्रारंभ केला. **स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम्** हा जणू काय वेदमंत्रच कंठस्थ करविला. याचा परिणाम असा झाला की, स्त्री व शूद्र यांना ज्ञानमार्ग बंद झाला. बराच काळ अशी स्थिती राहिल्यामुळे शूद्र स्वतःच अस्पृश्य समजून राहिले. मग काय ? ब्राह्मणांचे साधले व त्यांनी ब्राह्मणत्वाचा मक्ता आपणाकडे घेतला.

ब्राह्मणाचे जीवन पारमार्थिक जीवन आहे. जेव्हापासून योग्यतेप्रमाणे उच्चनीचत्वाची पारख नष्ट झाली, तेव्हापासून नामधारी गुरूवर्गाची खूप चंगळ उठली. जन्मापासून मृत्यूपर्यंत तर ते लुटत आहेत, परंतु त्यानंतरही श्राद्ध वगैरेची अवडंबरे त्यांनी माजविली.

सज्जनवृंद ! जेव्हा देशनौकेचे कर्णधार ब्राह्मण स्वार्थ बनले होते, तेव्हा **अष्टवर्षा भवेत् गौरी** हा अवैदिक पाठ उच्च स्वराने म्हटला जात होता व राष्ट्रीयत्व जवळजवळ नष्ट झाले होते. आणीबाणीच्या समयी ह्याच काठेवाड प्रांतात जेथे आपली ही परिषद भरली आहे. त्या भावनगरसमीप, मोरवीगावी आपल्या स्वदेशाच्याच जागृतीसाठी नव्हे तर अखिल भूमंडळ जागृत करण्यासाठी महर्षी दयानंदांचा जन्म झाला. त्यांनी तपश्चर्या केली. वेदाध्ययन केले. भरतखंडाच्या अवनत स्थितीचे परीक्षण केले आहे. निःस्वार्थ बनून मत-मतांतरांचा जो अग्नी भारतात प्रज्वलित होता, त्यामध्ये उडी ठोकली. पदभ्रष्ट ऋषीसंतानांस पुनः सन्मार्गावर आणून सोडले. चोहोकडे जागृती केली. लोकांनी त्यांना गालिप्रदान केले. त्यांच्यावर दगडधोंड्यांची वृष्टी केली व शक्य तितका त्यांचा तिरस्कार केला. परंतु या सर्व मानापमानाची मुळीच पर्वा न करता त्या महर्षी, तपस्वी, त्यागी दयानंदांनी वैदिक धर्माचा डंका वाजविलाच ! नामधारी ब्राम्हणांचा पोटशूळ आरंभ झाला. त्यांनी दयानंद ऋषींची गती कुंठित करण्याचा होता नव्हता तो प्रयत्न केला पण ईश्वरीय चाल काणत्या शक्तीस कुंठित करणे शक्य होते ? त्यांच्या केवळ दहा वर्षाच्या गर्जनेने पंजाब, संयुक्त प्रांत, राजपुताना, बंगाल, बिहारादी खडबडून जागे झाले. लाखो लोक त्यांचे अनुयायी बनले. उत्तर भारतवर्षातच काय, आज संपूर्ण भारतखंडात अवैदिकीय पाठाऐवजी खालीलप्रमाणे वैदिक पाठ सुरू केला.-

ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विंदते पतिम् । शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणो याति शूद्रताम् ।

thearyasamaj.org

आर्यसमाजाचे कार्य जगास विदितच आहे. स्पृश्यास्पृश्यतेचे काल्पनिक बंड मोडून आर्य समाजाने युद्धातही फार मदत केली आहे. परदेशगमनाने मनुष्य पतित समजले जात असत, तेच आता वांछनीय समजले जात आहेत. आर्यधर्म यच्चयावत् मानव समाजाकरिता आहे. आनंदांची गोष्ट ही की, पुष्कळ युरोपीयन स्त्री-पुरूषांनी या आर्यधर्माचा स्वीकार केला आहे व करीत आहेत. खरे म्हणाल तर लॉर्ड किचनेर, सर हेग, लॉर्ड फ्रेंच प्रभृतींची गणना पहिल्यापासूनच आर्यांमध्ये होऊ शकते. कारण की या योद्धांनी क्षेत्रियोचित धर्माचे परिपालन केले आहे. माझ्या मते हाच धर्म शासित शास्त्यात प्रेमरज्जूने ऐक्य करण्याचा प्रयत्न करीत आहे. मला पूर्ण भरवसा आहे की हा धर्माचे अनुयायी प्रतापसिंह व सज्जनसिंह वगैरे नरेश आहेत व होते, ही अभिमानास्पद गोष्ट होय. आंम्हालाही त्यांचेच अनुकरण केले पाहिजे. ही पण संतोषाची गोष्ट होय की, अद्यापही जरी स्वार्थी लोक इतस्ततः हातपाय आपटतात, तथापि खरे ब्राह्मण व सुशिक्षित जनता हा सर्व आम्हाला अनुकूल आहे. परंतु दक्षिण प्रांतातही अद्याप पुष्कळसे कर्तव्य बाकी आहे. आर्यांचे हे कर्तव्य आहे की या देशात भ्रातृभाव जागृत करावा.

जरी 'सत्यशोधक समाज' इत्यादी समाजांनी काहीशी सुधारणा केली आहे. तथापि या संस्थामुळे **विशेष अधिक कांही होऊ शकणार नाही.** कारण त्या **शठं प्रति शाठ्यं** या तत्वावर चालत आहेत. परंतु देशाला जागृत करणारी रामबाण मात्रा वैदिक धर्मच आहे. कारण हिंदूमात्राच्या अंतःकरणात वेदाभिमान वसत आहे व आर्यसमाज वेदानुकूल राहण्यातच आपला धर्म समजत आहे. आर्यसमाजाचा धर्म जगावर उपकार करण्याचा आहे.

सज्जनहो ! वैदिक धर्माचे महत्व अन्य मतांपेक्षा अधिक आहे, हे समजूनच मी या धर्माचा स्वीकार केला आहे.

राजाराम कॉलेज, हायस्कूल, गुरूकुल, अनाथालय, सरदार बोर्डिंग वगैरे सर्व संस्था मी आर्य प्रसारक सभा, संयुक्त प्रांत, हिच्या आधीन एवढ्याच उद्देशाने केल्या आहेत की, लोकांची मानसिक सुधारणा व्हावी. ही सुधारणा विद्येच्या द्वारेच शक्य आहे. म्हणून **विद्येची सूत्रे मी आर्य समाजाच्या हाती देऊन टाकली आहेत. मला जे शक्य झाले ते मी केले. माझी अंतःकरणपूर्वक इच्छा आहे की माझ्या जोतीबा, पंढरपूर वगैरे क्षेत्रांमध्येदेखील आपण गुरूकुल, हायस्कूले, समाज स्थापन करावेत. माझे कर्तव्य होते ते मी करून टाकले आहे. आता पुढील कर्तव्य सर्वस्वी तुमच्या हाती आहे. जर इतक्यावरही वैदिक धर्माचा प्रसार**

thearyasamaj.org

झाली नाही तर ह्यात आर्य प्रसारक व आपण हेच दोषी व्हाल. माझी इच्छा आहे की थोडेसे सच्चे कर्मवीर माझ्याकडेही आपला समय लावतील.

आर्यबंधूनो ! आपल्यामधून अद्याप कर्महीनता नाहीशी झाली नाही. ऋषींची प्रेरणा सुशिक्षित समुदायांमध्ये दृग्गोचर होत आहे. देशातील सर्व समाज, सभा, सोसायट्या वैदिक सिद्धांतानुसार कर्तव्य बजावीत आहेत. **यथेमां वाचं कल्याणिम् ।** ह्या वेदाज्ञेनुसार आर्यसमाजाने गुरूकुले, अनाथालये, कॉलेज वगैरे संस्था काढून भेदभावरहित सर्व जातीच्यामध्ये वेदवाणीचा प्रचार केला आहे. तरीही आम्ही अद्यापि ऋषींचे शतांशाने कर्मवीर बनलो नाही. अकर्मण्यतेचा हा समय नव्हे. कर्मण्यता पाहिजे आहे.

उदाहरणार्थ, पटेल बिल घ्या ! त्यानुसार वागण्यास आपण प्रारंभ केला पाहिजे. वेदप्रतिपादित गुणकर्मानुसार आपण कृतीने वर्णव्यवस्था पाळीत आहोत, हे सिद्ध करण्याची आता वेळ आली आहे.

मी आपला बराच वेळ घेतला. परंतु आपण लक्षपूर्वक, उत्साह दाखवून, माझे भाषण ऐकून घेतलेत, त्याबद्दल मी आपले पुनः अंतःकरणपूर्वक आभार मानून शेवटी सर्वांस विनयपूर्वक सांगतो की, ऋषी दयानंदांच्या कार्याची आपल्या हृदयावर छाप पडली असेल तर याद राखा की, ह्या काठेवाड भूमीमध्ये बाळ मूलशंकराने कठीन प्रतिज्ञा करून गृहत्याग केला होता, तर आपणही या तीर्थस्थानाहून परत जाताना कठीण प्रतिज्ञा करावी की, वैदिक सिद्धांत व विचार आम्ही कृतीत आणण्यासाठी यत्किंचितही कसून करणार नाही. **बंधूहो ! अंती सत्याचा जय आहे** हे लक्षात बाळगून ऋषींचे मशीन प्रसृत करण्याचा प्रयत्न करा व कामास लागा. परमात्मा तुम्हास बळ देईल. कारण की कर्मवीरांचा साहाय्यकर्ता तोच ईश्वर आहे.

- संकलनकर्ता -

प्रकाशवीर आर्य, उदगीर

मो. ९६६५२०८४०१

॥ ओ३म् ॥

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, परली

आयु के ५०-६० वर्ष बिता चुके तथा गृहस्थाश्रम की जिम्मेदारियों मुक्त, अपनी शासकीय व अशासकीय नोकरियों से सेवानिवृत्त हो चुके तथा सांसारिक मोहबन्धनों से ऊब चुके सज्जन महानुभावों, दम्पतियों के लिए स्वास्थ्य रक्षा, सेवा, स्वाध्याय, आध्यात्मिक साधना हेतु आर्य वानप्रस्थ आश्रम, परली वैजनाथ जि बीड- (महा.) में पूरी व्यवस्था है। वे यहां पर आकर ठहर सकते हैं।

thearyasamaj.org

शेतकऱ्यांना नवसंजीवनी देणारा आर्य कार्यकर्त्ता

भारत हा एक कृषिप्रधान देश आहे. शेती हा आपला परंपरागत व्यवसाय असून आपला शेतकरी दिवसभर काबाडकष्ट करून शेतीची मशागत, पेरणी व पिकांची संगोपन यासाठी विविध रासायनिक खतांचा वापर करत असून रासायनिक खते, औषधी आणि मजुरी यांचे वाढलेले अमाप भाव यामुळे खर्च आणि उत्पन्नाचा ताळमेळ नसून शेतकरी सुखी आणि समाधानी नाही. जमीनीची पोषकता तसेच रोगप्रतिकारक शक्ति, सुपीकता या रासायनिक खतामुळे व इतर औषधामुळे दिवसेंदिवस नष्ट होत चालले आहे. त्यामुळे पाहिजे तसे उत्पादन शेतकरी घेऊ शकत नसल्यामुळे या सर्व बाबींचा विचार करून एक अल्पसा प्रयत्न केला आहे, ज्यामुळे कमीत कमी खर्चात जास्तीत जास्त उत्पादन घेता यावे शेतकरी सुखी व समाधानी व्हावा यासाठी अनेक वर्षाच्या अथक परिश्रमाने श्री बाबुराव काशिनाथअप्पा आर्य यांनी एक बेजोड आयुर्वेदिक औषधी तयार केली आहे.

श्री बाबुराव आर्य हे एक आर्य समाजी विचारधारेची एक कर्मठ व जिद्दी व्यक्तिमत्व होय. लातूर जिल्ह्यातील एका छोट्याशा होनमाळ या गावात शेतकरी कुटुंबात त्यांचा जन्म झाला. लहानपणापासूनच दुसऱ्यासाठी काहीतरी करण्याची जिद्द मनात बाळगून त्यांनी शिक्षण अपुरे असतानाही आयुर्वेदाचे अथक अध्ययन करून अनेक वर्षे चिकित्सा करत असताना त्यांच्या लक्षात आले की माणसांच्या आजाराचे मूळ कारण. अन्न हे आहे. मग त्यांनी ठरवले की आपण या अन्नालाच नीरोगी केले, तर सर्व रोग नाहीसे होतील आणि म्हणून त्यांनी कृषि व आयुर्वेदाच्या क्षेत्रात अभूतपूर्व क्रांती घडवून आणली. यामुळे अनेक शेतकरी रासायनिक खताचा वापर न करता कमीत कमी खर्चात शास्त्रशुद्ध पद्धतीने आयुर्वेदाच्या आधारे शेती करत आहेत. आज अनेक शेतकरी त्यांच्या या अविष्काराचे सदुपयोग घेऊन शेतीला रसायनापासून तसेच स्वतःला रोगापासून वाचवण्याचा प्रयत्न करत आहेत.

शिवसंजीवनी विषयी थोडेसे...

शिव संजीवनी हे औषध आयुर्वेदिक असून शास्त्रोक्त पद्धतीने निर्मित रसायनमुक्त आहे. **शिव संजीवनी** हे पिकांचे पंचप्राण आहे. हे एकच औषध सर्वच पिकांसाठी पेरणीपासून ते

thearyasamaj.org

उत्पादनापर्यंत संपूर्ण कार्य करते. बीजप्रक्रिया व २० दिवसांच्या अंतराने तीन ते पाच फवारणीचा पिकानुयार कोर्स आहे.

पिके -

कापूस, सोया, उडी, गहु, करडी हरभरा, उस, साळ, मुग, ज्वारी, मिरची, कांदा, भेंडी, फळे संत्रा, मोसंबी, अंबा, डाळींब, केळी, द्रांक्ष, टरबुज इत्यादी सर्व भाजीपाल्यांसाठी उपयुक्त

- वापरण्याची पद्धत :-

बीज प्रक्रियाः - एक लिटर पाण्यामध्ये ५ मिली बियाणास लावून सावलीत सुकवावे.

१) बियाणांसाठी - सोयाबीन, उडीद, मूग यासारख्या बियाणांची बीजप्रक्रिया हलक्या हाताने करावी. ज्यामुळे वरचे कवच निघणार नाही.

२) कंद किंवा हळद, उस व कापूस यासरख्या पिकांसाठी पाणी एका टबमध्ये घेऊन काही वेळ बेणे तसेच बुडवून ठेवावे.

पहिली फवारणी :

पेरणीनंतर २० दिवसांनी (प्रति लिटर ३ मिली प्रमाणे)

दुसरी फवारणी :-

पेरणीनंतर ४० दिवसांनी (प्रति लिटर ३ मिली प्रमाणे)

तीसरी फवारणी :-

पेरणीनंतर ६० दिवसांनी (प्रति लिटर ४ मिली प्रमाणे)

हळद, उस व कापसासाठी एकूण ५ फवारणीचे कोर्स

फायदे :-

१. बीजांकुर क्षमता वाढवते.

२. पिकांची चांगल्या प्रकारे वाढ करून रोगापासून बचाव करते.

३. झाडांचे फुटवे, पान फुल व फळ यामध्ये जास्तीत जास्त वाढ करते.

४. फळांचा आकार वाढवून रंग, चव व वजन वाढविते.

५. दुसऱ्या फवारणीमुळे फुले गळण्याचे प्रमाणे संपूर्णतः थाबते.

६. तीसरी फवारणीमुळे फळधारणा भरपूर होऊन कण वाढण्यास मदत होते.

टीपः-

अधिक उत्पन्नासाठी पेरणी अमावस्या झाल्यानंतर करावी.

अनुभवी शेतकरी-

सर्वश्री सुधाकरजी देशमुख, रमेश रेड्डी, दिनकर घाटोळ अभिजीत राऊत, दत्ता खोत चंद्रकांत चव्हाण, गोविंद समुद्रे सत्यपाल राऊत, महादेव मस्के

●●●●●

अधिक माहितीसाठी संपर्क करा

वैद्य श्री बाबुराव आर्य

मो. ९७३०३८७१०५

श्री दयानंद शास्त्री

मो.९६६५२३१२३७

thearyasamaj.org

वैदिक पौरोहित्य कर्माची यथार्थता

-ज्ञानकुमार आर्य

गुरूकुल परळी येथे नुकत्याच पार पडलेल्या तेराव्या प्रांतीय पुरोहित प्रशिक्षण शिबिराच्या निमित्ताने विशेष लेख देत आहोत- संपादक

पुरोहितांकडून शास्त्रोक्त पद्धतीने केले जाणारे सोळा संस्कारादी विधी व यज्ञीय कर्मकांड यथासांगपणे पार पाडण्याचे कार्य म्हणजे पौरोहित्य. पौरोहित्य योग्य प्रकारे व प्रभावशाली झाले तरच ते फलदायी होते, त्याचे अपेक्षित परिणाम दिसून येतात. प्रस्तुत लेखाच्या शीर्षकास अनुसरून येथे वैदिक पौरोहित्याविषयी थोडक्यात विवेचन केले आहे.-

आजच्या पौरोहित्याचे वास्तव-

पुरोहित हा समाजाचा मार्गदर्शक असतो. त्याने संस्कारादी प्रत्येक धार्मिक विधीचे स्वरूप व महत्व समजावून सांगितले पाहिजे. संस्कारातील प्रत्येक विधीची, कर्मकांडाची उकल केली पाहिजे. त्यामागचे कारण स्पष्ट केले पाहिजे. अर्थात संस्कारांची व्याख्या (विवेचन) केली पाहिजे.

परंतु आजकाल अधिकांश पुरोहितांकडून संस्कारांची व्याख्या वा कर्मकांडाचे स्पष्टीकरण अभावानेच केले जाते. केवळ मंत्रभाग घेतला जातो. कसेतरी मंत्र म्हणून संस्कार उरकून घेण्याकडे कल असतो. केले जाणारे मंत्रोच्चारणही अशुद्ध वा अर्धवट असते. काही पुरोहितांना तर त्या-त्या संस्काराचे विषयज्ञानही नसते. याबरोबरच वेशभूषेकडे दुर्लक्ष करणे, विवेचनाची भाषा व वाणी प्रभावशाली नसणे, वेळेचे नियोजन न करणे, हातात दोरा बांधण्यासारख्या पौराणिक गोष्टी वैदिक कर्मकांडात घुसडणे इत्यादी गोष्टींमुळे ही संस्कारांचा प्रभाव दिसून येत नाही. याकरिता पुरोहितांनी संस्कारांमधील ही दुरवस्था व अनावस्था टाळून प्रभावशाली पद्धतीने पौरोहित्य करण्यासाठी जाणीवपूर्वक प्रयत्न केले पाहिजेत.

विषयज्ञानाची आवश्यकता-

जो संस्कार करावयाचा आहे, त्यांचे स्वरूप, महत्व व इतर आनुषंगिक गोष्टी इत्यादी स्वरूपाचे त्या संस्काराचे विषयज्ञान पुरोहिताला असले पाहिजे. हे विषयज्ञान नसेल तर त्या संस्काराची व्याख्या किंवा विवेचन, स्पष्टीकरण करता येणार नाही. प्रत्येक संस्काराची वैज्ञानिक व्याख्या, त्याचे शारीरिक, मानसिक, आत्मिक व सामाजिक महत्व सांगता आले पाहिजे. यज्ञ किंवा संस्कार हे निरर्थक कर्मकांड नसून ते आत्मोन्नतीसाठीच व जगाच्या

thearyasamaj.org
कल्याणासाठीच अत्यावश्यक असे श्रेष्ठ कर्म आहे, हे पटवून देता आले पाहिजे. याविषयी विचारल्या गेलेल्या शंकांचे निरसन करता आले पाहिजे. हे सर्व अवगत होण्यासाठी पुरोहितांनी यज्ञीय कर्मकांड व ते ते संस्कार मूळातून समजून घेतले पाहिजेत. वाचले पाहिजेत. वर्गावर अध्यापनाला जाण्यापूर्वी अध्यापक-प्राध्यापक शिकवावयाच्या विषयाची तयारी करतात, टिपणे, संदर्भ इत्यादी काढून तयार ठेवतात. विषय वेळेत शिकवून झाले पाहिजे याची खबरदारी घेतात. पुरोहितांनीही संस्कारापूर्वी या सर्व गोष्टींची तयारी करणे आवश्यक आहे. विधीला लागणारा वेळ, विवेचनाला लागणारा वेळ व उपलब्ध वेळ यांचा ताळमेळ घालता आला पाहिजे. विषयानुरूप सूक्ती, सुभाषिते, मंत्र, श्लोक, संतवचने, म्हणी इत्यादींचा वापर केल्यास विवेचन प्रभावशाली होते.

मंत्रपठण, भाषा व वाणी-

पुरोहिताचे मंत्रपठण शुद्ध स्पष्ट व खणखणीत असावे. त्या-त्या मंत्राचे आरोह-अवरोह, गती व लय लक्षात घेऊन मंत्रोच्चारण करावे. ज्या भाषेतून व्याख्या विवेचन करावयाचे ती भाषा चांगल्या प्रकारे अवगत असली पाहिजे. लिंग, वचन व वाक्यरचनेच्या चुका होऊ देऊ नयेत. आपले वक्तृत्व मुद्देसूद, सोदाहरण, स्पष्ट व आवाजातील चढ-उताराने युक्त असेल तर ते प्रभावी होते. संस्कारातील क्लिष्ट वा अवघड भाग विवेचनात सोपा करून सांगणे हे सर्वात महत्वाचे आहे. यजमानास व उपस्थितांना तो संस्कार समजेल अशा पद्धतीने व्याख्या करावी.

पुरोहिताची वेशभूषा-

संस्काराच्या वेळी पुरोहिताने भारतीय वेशभूषेत असले पाहिजे. वस्त्र-प्रावरणे स्वच्छ असावीत. ती नीट नेटक्या पद्धतीने धारण करावीत. थोडक्यात आपल्या वैशिष्ट्यपूर्ण वेशभूषेने पुरोहित सर्वात उठून दिसला पाहिजे. उपस्थितांवर त्यांचा प्रभाव पडला पाहिजे. 'एक नूर आदमी, दस नूर कपडा' यातील इंगित हे असे आहे. या सर्व गोष्टी लक्षात घेऊन पोरोहित्य केले तर ते निश्चितच यशस्वी व प्रभावशाली होते. यशस्वी व फलदायी पौरोहित्यासाठी पुरोहितांनी खालील दोन पुस्तके अवश्य वाचावीत.

१) संस्कार-चन्द्रिका- पं. भीमसेन शर्मा व पं. आत्माराम अमृतसरी, प्रकाशक-सार्वदेशिक आर्य प्र. सभा, दयानंद भवन, नवी दिल्ली-२

२) संस्कार-चन्द्रिका- डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, प्रकाशक- विजयकृष्ण लखनपाल, डब्ल्यू-७७ ए. ग्रेट र कैलाश-१, नवी दिल्ली-४८

-सुरभारती स्वाध्याय केंद्र,
सीताराम नगर, लातूर
मो. ९६२३८४२२४०

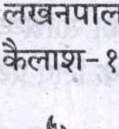

thearyasamaj.org

आर्य समाज, परली-वै. द्वारा संचालित स्वामी श्रद्धानन्द गुरूकुलाश्रम में
दानप्रदात्री माता स्व. शान्तिदेवी मायर(लन्दन) द्वारा प्राप्त १५ लाख रूपयों के पावन दान से
रूग्णों की सेवा में मराठवाडा (महाराष्ट्र) की पावन सन्तभूमि में सर्वप्रथम उदघटित

स्व. दीवानचन्द मायर स्मृति 'संजीवनी आरोग्य मंदिर'

शरीर शुद्धि से स्वास्थ्यलाभ, रोगनिवारण व सुंदरता प्राप्त करो।

औषधिविना विविध प्रकार के जीर्ण रोग, मधुमेह, रक्तचाप, हृदयविकार, कर्करोग, वातरोग, आमवात, कुष्ठरोग, मोटापा, चेहरों व आखों का कालापन, मुखमण्डल विद्रुप होना, वांग आदि के साथ मानसिक तान तनाव, निराशा, उद्विग्नता, पागलपन, आदि रोगों का शरीर शुद्धि के माध्यम से सम्पूर्ण इलाज। इसके लिए योग, प्राकृतिक व आयुर्वेद चिकित्सा के द्वारा स्वास्थ्य लाभ का सुनहरा अवसर इस आरोग्य मन्दिर में!

आरोग्य मन्दिर की विशेषताएं

चिकित्सा समय
प्रातः ६ से ९/सायं. ४ से ६

* तज्ज्ञ एवं अनुभवी वैद्यों द्वारा इलाज।
* महिला व पुरूष रूग्णों के लिए स्वतंत्र चिकित्सा कक्ष।
* महिला रूग्णों के लिए अलग से महिला परिचारिका।
* रूग्णों की भोजन व निवास की अल्पशुल्क में व्यवस्था।
* शुद्ध हवा-पानी व निसर्ग का सान्निध्य।
* आध्यात्मिक जीवनयापन के लिए प्रयत्न।

रूग्ण जांच व पंजीकरण
प्रातः १० से १२ बजे तक

पंजीकरण शुल्क रू. ५० (प्रति रूग्ण)

चिकित्सक

वैद्य विज्ञानमुनि (मोबा.९९७५३७५७११) डॉ. ब्रह्ममुनि (मोबा.९४२१९५१९०४)

thearyasamaj.org

म.दयानंद- (मागील अंकावरून...)
मराठी कॉमिक्स

पं. लेखराम प्रभावित झाले !

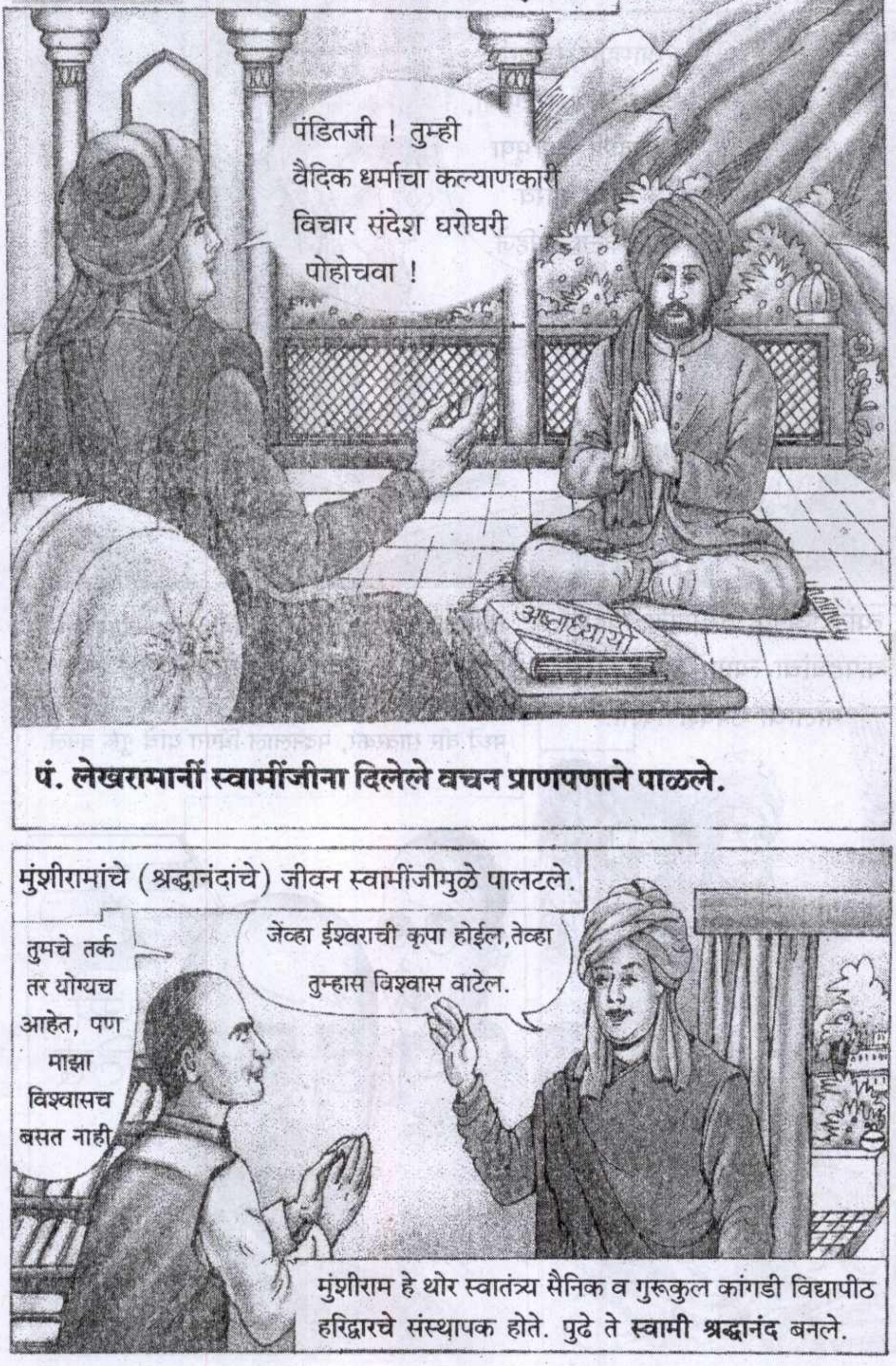

thearyasamaj.org

महाराणांस उपदेश

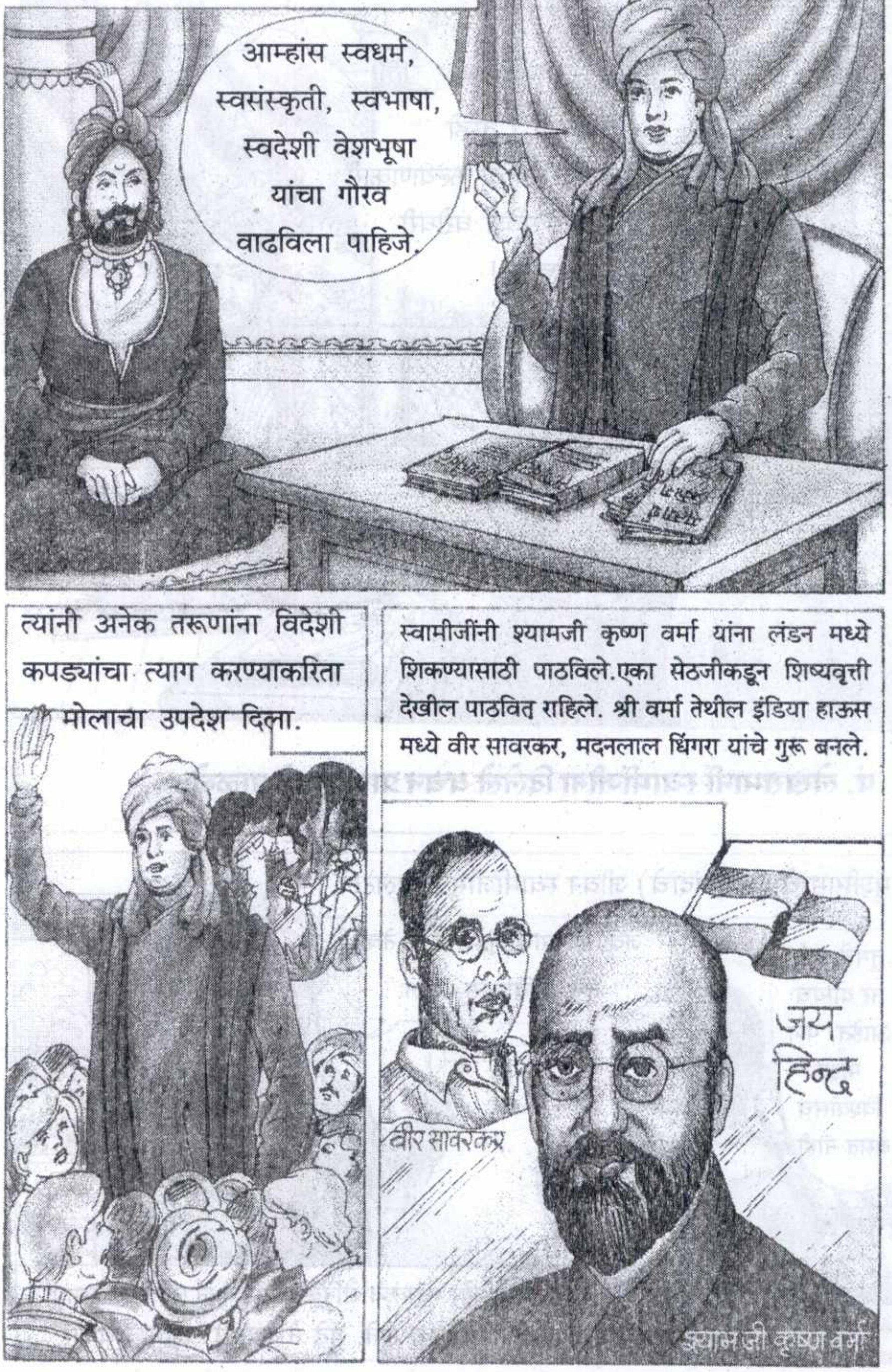

thearyasamaj.org

-* पुरस्कार एवं अभिनन्दन *-

गुरूकुल झज्जर (हरियाणा) के वार्षिकोत्सव पर योगदर्शन के सूत्रों को कंठस्थ करनेवाले स्कूली बच्चों के साथ आचार्य बलदेवजी, स्वामी प्रणवानन्दजी, स्वामी देवव्रतजी, स्वामी विजयपालजी तथा अन्य ।

आर्य समाज सोलापुर में शुद्धसंस्कार के पश्चात् श्री बाबुराव पवार का अभिनन्दन करते हुये आर्य विद्वान पं.राजवीरजी शास्त्री एवं पदाधिकारी तथा आर्यजन ।

आदर्श वैदिक विवाह करनेवाले नवदम्पती श्री वेदसुमन एवं सौ.गायत्री के साथ नवदम्पती के माता-पिता पं.राजवीरजी,ललिता देवी शास्त्री एवं पं प्रतापसिंहजी,सुमनदेवी चौहान।

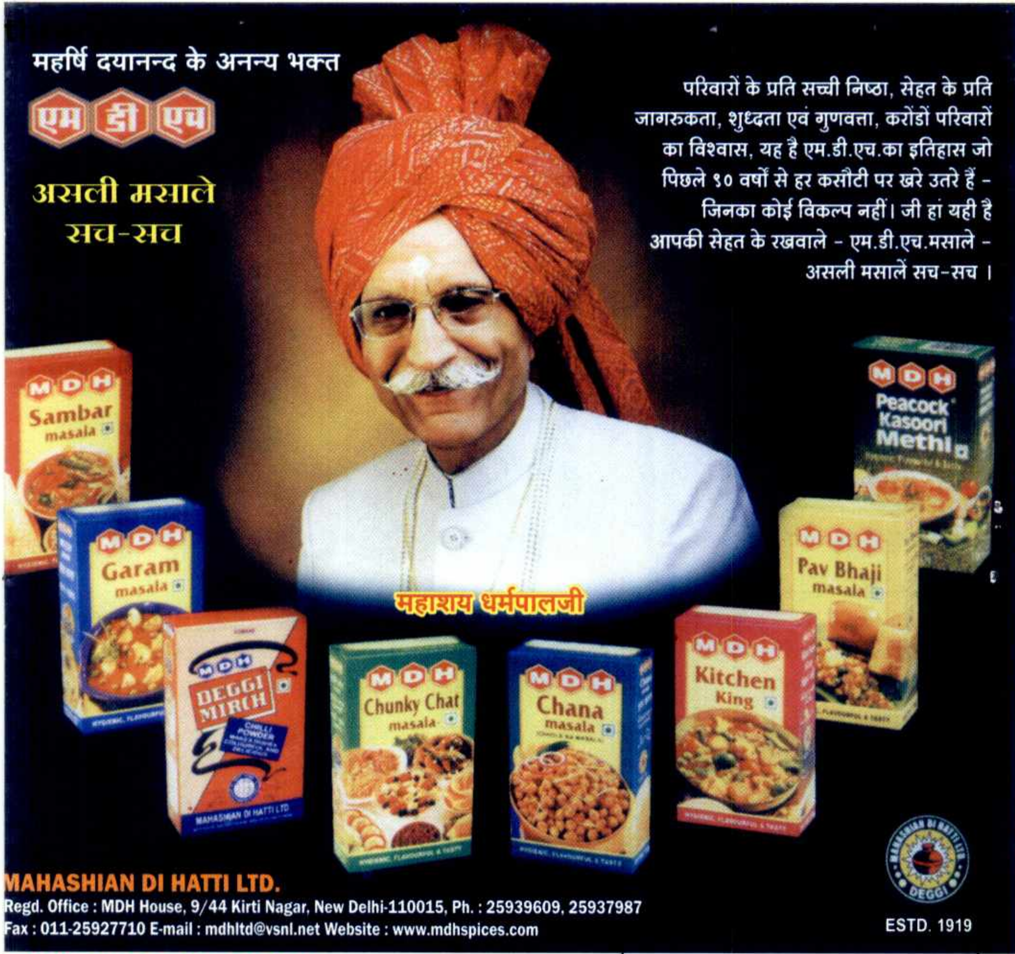

.-2/18/RNP /16/Beed/2012-14

Reg. No. RNI No. MAHBIL/2007/7493
Postal No. L-2/18/RNP/16/Beed/2012-14

सेवा में,
श्री

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड. (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)' इस स्थान से प्रकाशित किया।

हैदराबाद स्वतंत्रता संग्राम के भूमिगत सेनानी, आर्य समाज, संभाजीनगर (औरंगाबाद) के पूर्व प्रधान

स्व.श्री नरेन्द्रसिंहजी संग्रामसिंहजी चौहान की

जन्म ३१ मार्च १९२८

पावन स्मृति में 'वैदिक गर्जना' मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ सस्नेह भेट

निधन १७ मार्च २०००

सौजन्य

जुगलकिशोर चुन्नीलाल दायमा	दया[illegible] राजाराम बसैये	ॲड.जोगेंद्रसिंह नरेंद्रसिंह चौहान
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

आर्य समाज, महर्षि दयानंद भवन, सरस्वती कालोनी, संभाजीनगर (औरंगाबाद)